ISSN-2321-3981

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

आषाढ़ २०७५ जुलाई २०१८

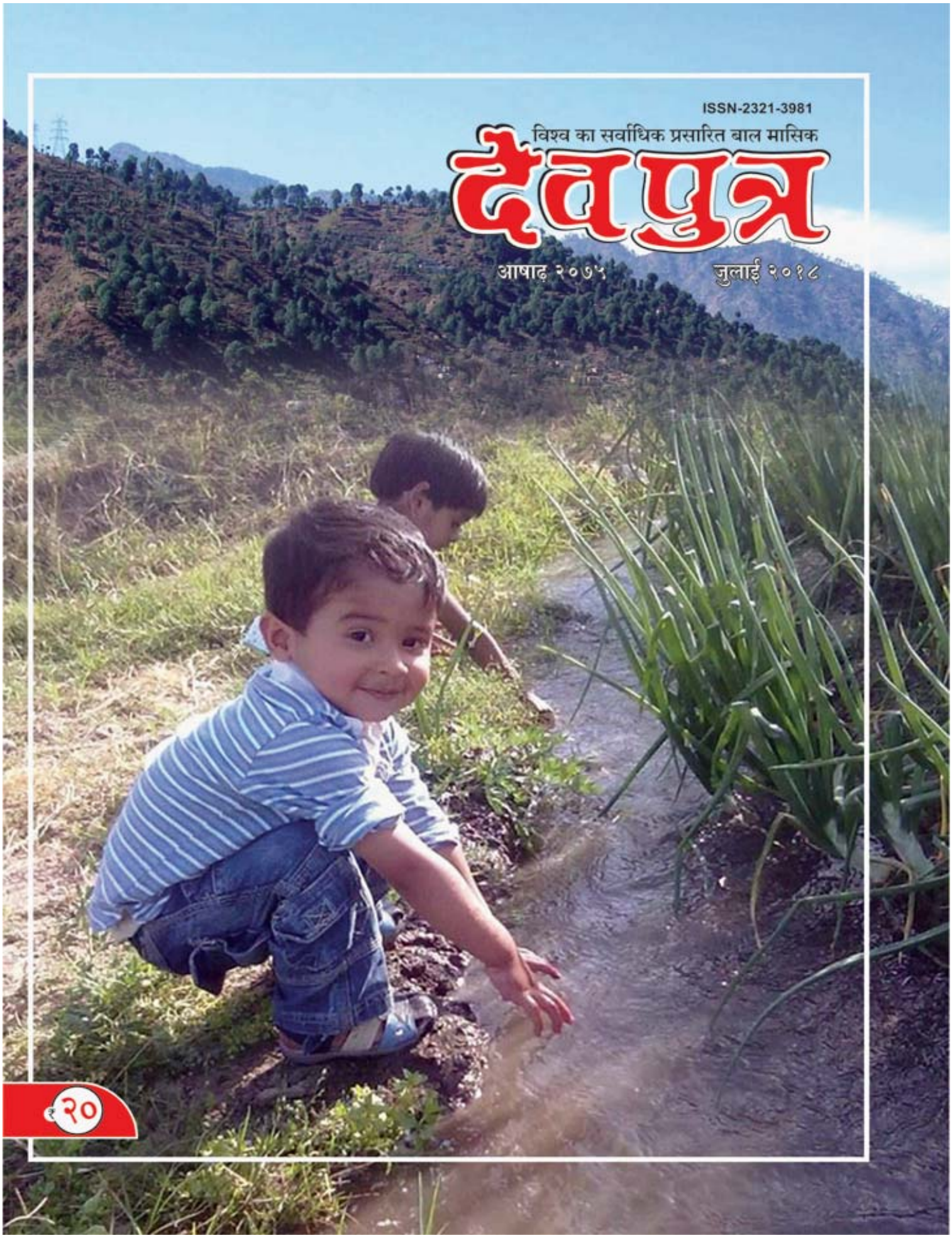

₹२०

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

सामान्य अध्ययन

निःशुल्क परिचर्चा के साथ बैच प्रारंभ

29 अप्रैल

शाम 3:00 बजे

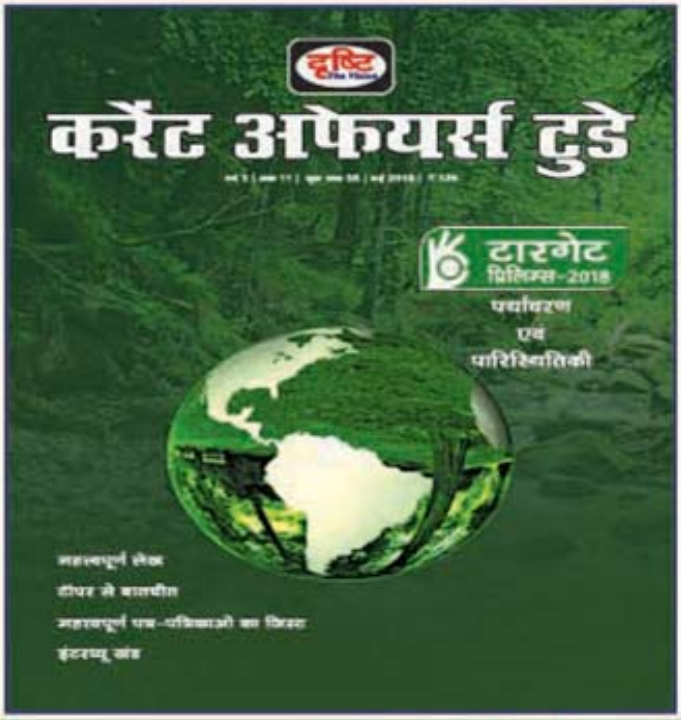

आपके नज़दीकी पुस्तक विक्रेता के पास उपलब्ध

सब जानते हैं कि सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी सिर्फ किताबों और नोट्स से नहीं हो सकती। यह भी ज़रूरी है कि आप दिन-प्रतिदिन की घटनाओं से जुड़ने के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध अच्छे लेखों को पढ़ते रहें और अच्छी डिबेट्स को सुनते रहें।

आपकी इन सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए हम आपको आमंत्रित करते हैं
अपनी लोकप्रिय वेबसाइट और यू-ट्यूब चैनल पर

www.drishtiIAS.com

Visit us: YouTube / DrishtiIAS & SUBSCRIBE

वितरण एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें– (+91) 8130392355

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 | Contact : 87501 87501, 011- 47532596

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

आषाढ़ २०७५ ▪ वर्ष ३९
जुलाई २०१८ ▪ अंक १

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com

सीधे देवपुत्र के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या –53003591451
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

इन्दौर का महात्मा गाँधी चिकित्सा महाविद्यालय मध्यप्रदेश के श्रेष्ठ महाविद्यालयों में से एक माना जाता है। आप सब बच्चों का भी चिकित्सा शिक्षा में प्रवेश हेतु वह प्रथम आकर्षण होता है। इस महाविद्यालय में वैसे तो एलोपेथी चिकित्सा पद्धति का शिक्षण दिया जाता है किन्तु इस शिक्षण के समानान्तर यहाँ एक विशिष्ट कार्यक्रम सम्पन्न होता है। जिसे नाम दिया गया है 'बियाण्ड मेडीसीन'। यह एक सारस्वत व्याख्यानमाला के स्वरूप में होता है। वक्ता के रूप में विश्व के जाने माने चिकित्सा विज्ञानी एवं शोधकर्ता यहाँ आते हैं। आप कहेंगे 'बियाण्ड मेडीसीन' अर्थात् औषधियों से परे हटकर इन व्याख्यानों में और किन चीजों से रोगों के उपचार की चर्चा होती होगी?

उदाहरण के लिए मैंने एक व्याख्यान सुना था जो पूरी तरह प्रार्थना पर केन्द्रित था। कैसे दुनियाभर में इस पर शोध हुए, क्या निष्कर्ष निकले और साथ में उदाहरण स्वरूप वे घटनाक्रम जो साक्ष्य थे कि जब विज्ञान और औषधियों ने भी घुटने टेक दिए तब केवल आस्था, श्रद्धा और विश्वास से युक्त सच्चे हृदय से की गई प्रार्थना ने असाध्य रोगों को भी कैसे ठीक कर दिया?

यह बात सबके गले इसलिए भी उतर रही थी क्योंकि बात सप्रमाण कही गई और कहने वाले व्यक्ति भी विदेश की धरती से आये थे और प्रख्यात विज्ञानी थे।

हम सब अपने विद्यालय में नित्यप्रति ईश्वर से प्रार्थना करते हैं तब क्या हमें इस प्रक्रिया की गम्भीरता पता होती है? क्य हम इसके सकारात्मक प्रभावों को समझकर हृदय से डूबकर यह कार्य करते हैं?

विश्वास रखिए यदि यह प्रार्थना एड्स, कैंसर, हृदय रोग जैसी गंभीर व्याधियों को ठीक कर सकती है तो हमारे तन-मन में बसी आलस्य, स्मरण शक्ति की कमी, चंचलता का अभाव, अध्ययन में मन न लगना और खेलों में पिछड़ने जैसी व्याधियों को कैसे ठीक नहीं करेगी?

आइए, श्रद्धा और विश्वास से हम सब प्रतिदिन करें- 'प्रार्थना'

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

अनुक्रमणिका

कहानी

- दादी की अलमारी - मीना नवीन ०५
- गुल्ली-डण्डा - मुंशी प्रेमचंद १०
- घुंघरूओं का रहस्य - प्रज्ञा गौतम १९
- धत् तेरे की - डॉ. अमिताभ शंकर चौधरी २३
- मिनी और टिन्नी - डॉ. अनिता राठौर 'मंजरी' ३६
- आत्मविश्वास हो तो - रमाशंकर ४०

लघु कहानी

- सुधर गया कुक्कू - शिवचरण चौहान २५
- केले के छिलके - डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल २९

प्रसंग

- गुरु आदेश प्रथम पालन - अविनाश कस्तूरे ०८
- आजाद ही रहेंगे - रामकुमार गुप्त ३२
- गुरूजी का प्रसाद - डॉ. श्याम मनोहर व्यास ४८

कविता

- कारे बदरा पानी दे - कृष्ण शलभ १५
- वश में होता - राजेन्द्र प्रसाद 'मधुबनी' २२
- अपने कलाम - रूद्रप्रकाश गुप्त 'सरस' ३२
- शावक और जलधारा - शिवमोहन यादव ३३
- तुम भी पीना - रावेन्द्र कुमार 'रवि' ३५
- चन्दा - ओऽम शरण आर्य 'चंचल' ४४
- बनें हम तुम्हारे जैसे - मोहन गर्ग ४४
- चंदामामा - राजेन्द्र निशेश ४५
- सबसे प्यारा निभाता - डॉ. शरदनारायण खरे ४५
- काहे माह जुलाई आता - पवन पहाड़िया ४७

बाल प्रस्तुति

- गुरुवर तुम्हे प्रणाम - कृष्णा गेहलोत ३१

चित्रकथा

- दादाजी की सहायता - देवांशु वत्स ०९
- लाल ग्रह मंगल - संकेत गोस्वामी ३८
- हम पिछड़े क्यों? - देवांशु वत्स ४६

स्तंभ

- गाथा वीर शिवाजी की - १६
- संस्कृति प्रश्नमाला - १७
- कामरूप के संत साहित्यकार - डॉ. देवेनचन्द्र दास सुदामा २६
- हमारे राज्य वृक्ष - डॉ. परशुराम शुक्ल ३४
- आपकी पाती - ३५
- पुस्तक परिचय ४३

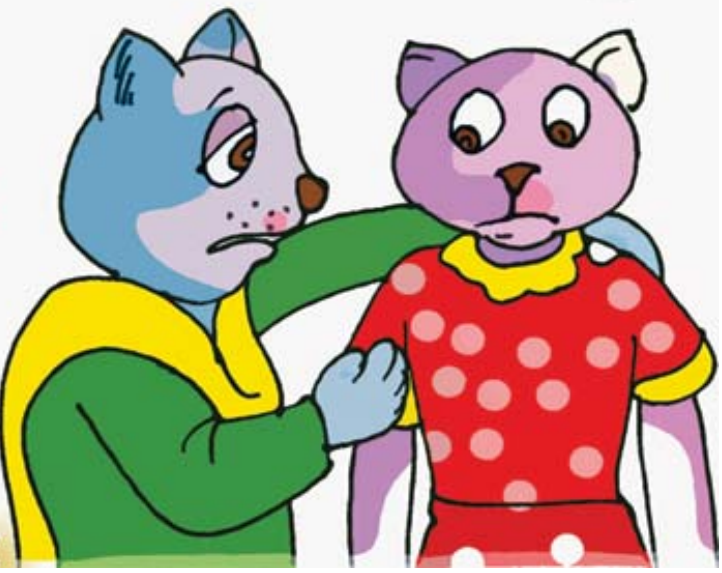

दादी की अलमारी

कहानी : मीना नवीन

दादी की अलमारी सक्षम की सोच में हमेशा रहती था तब दादी ने उसके सामने अपनी अलमारी खोल दी थी। उसको पसंद का खिलौना लेने की इजाजत दे दी थी। इसके बाद उसने कभी भी अलमारी से कोई खिलौना नहीं लिया। दादी की अलमारी घर की तीसरी मंजिल पर बने कमरे में रखी है।

अब सक्षम छः साल का हो चुका है। उसको अभी भी दादी की अलमारी की देखी झलक नहीं भूली। उसको इतना पता है अलमारी में बहुत सारे खिलौने हैं। इस दौरान कभी

भी उसे ऐसा मौका नहीं मिला की दादी ने कभी उसे अलमारी से खिलौने देखने को भी दिए हो। जब वह भी उस कमरे में जाता तो वह दादी से अलमारी खोलने के लिए अवश्य कहता। दादी ने कभी भी उसके कहने पर अलमारी को न खोला।

दादी उसको बहुत प्यार करती है। उसको खाने के लिए भी बहुत कुछ बनाकर देती है। जब भी सक्षम का जन्मदिन होता तो दादी उसे हर बार कोई खिलौना जरूर देती है। उसे नहीं पता दादी खिलौना कब और कहाँ से लेकर आती है। जन्मदिन पर शाम को दीप जलाने के समय ही दादी उसे खिलौना देती है। इससे पहले उसके साथ उपहार के बारे में कोई बात नहीं करती। जन्मदिन पर मिले सब उपहार को खोलते समय उसे पता चलता है कि दादी ने उसे उपहार में क्या दिया है?

दो दिन बाद दीवाली थी। घर का हर सदस्य साफ सफाई के कार्य में व्यस्त था। घर के शिखर से लेकर नीचे तक हर जगह की सफाई की गई। छोटी दीवाली के दिन पिताजी ने सजावट के लिए लाईटें भी लगाई। दादी ने आंगन में टांगे जाने वाला कंदील अपनी अलमारी में रखा बताया। सक्षम पिताजी के साथ कमरे में चला गया।

ज्यों ही पिताजी ने अलमारी को खोला तो उसने वहाँ रखे कई डिब्बे अलमारी से बाहर निकलवा लिए। डिब्बों को खोलता हुआ। भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुओं को देखकर सक्षम हैरान हो गया था।

''पिताजी! मैं ले सकता हूँ?''

''नहीं बैटा, देखकर रख दे। यह सामान दादी ने संभालकर रखा हुआ है कई सालों से। जब मैं छोटा था दादी मुझे भी नहीं देती मैं सिर्फ देखता था।

जापानी पंखे को डिब्बी से निकालकर पूछने लगा,

''पिताजी, यह देखो! यह क्या है भला?''

''यह जापानी पंखा है।''

''जापानी पंखा?''

''हाँ।''

''यह कैसे चलता है।'' पिताजी ने उसकी दोनों डंडियों को घुमाकर मिलाया तो पंखा फैला कर तथा हिलाकर सक्षम जिद्द करता हुआ कहने लगा, ''पिताजी मुझे दो, मैं भी करूँगा।''

''कितना सुन्दर है न पिताजी, यह पंखा?''

''हाँ बहुत सुन्दर है, चल वापिस डिब्बी में रख दे।'' कहते हुए पिताजी ने उसके हाथ से पंखा लेकर वापिस पैक कर डिब्बी में रख दिया। सक्षम ने दूसरा डिब्बा खोला उसमें बेटरी से चलने वाला छोटा सा पंखा था। पिताजी ने साथ ही लिफाफे से बैटरी निकालकर लगा दी, और पंखा चलने लगा। यह एक छोटा टेबल पंखा था।

''इसको हम कहीं बाहर भी लेकर जा सकते हैं।'' ऐसा कहते हुए पिताजी ने यह पंखा भी बंद करने के बाद रख दिया।

सक्षम ने एक बड़ा डिब्बा खोल दिया। इसमें एक गुड़िया थी।'' काली-कली आँखों वाली, जिसने लाल रंग की फ्राक पहनी हुई थी। उसने गुड़िया पकड़ कर बाहर निकाली। गुड़िया ने दोनों आँखें खोल ली, जैसे एक दम नींद से जाग गई हो। जैसे ही सक्षम ने उसे अपने चेहरे के सामने किया तो वह आँखें झपकाती हुई उसकी तरफ देख रही थी।

''पिताजी! यह हम बाहर निकाल सकते हैं?''

''नहीं दादी गुस्सा करेगी, तू जल्दी से अन्दर रख दे।''

''नहीं पिताजी! मैं कहूँगा मैंने ले ली है, दादी कुछ नहीं कहेगी।''

सक्षम गुड़िया हाथ से नहीं छोड़ रहा था पर पिताजी ने उसके हाथ से गुड़िया खींच ली और पैक करके रख दी।

सामने एक पारदर्शी पैकिंग में एक भूरे रंग का कुत्ता, उसे नजर आया। उसने झट से उसे उठा लिया। ''पिताजी! यह डौगी क्या करता है?''

''भौंकता है। तुम्हे देखना है?''

''हाँ पिताजी!''

''हाँ दिखाता हूँ पर तू लेगा नहीं, सिर्फ देखेगा, ठीक?''

''ठीक है पिताजी, दिखा दो बस।

पिताजी ने कुत्ते के पेट से ढक्कन हटा कर सैल डाल दिया। बटन दबाते ही कुत्ता भौं-भौं करने लगा। उसको भौंकते देख सक्षम खुशी में उछल उछल कर पीछे हट रहा था। कुत्ता भौंकता आगे बढ रहा था। पिताजी को भी जैसे दादी के आ जाने का डर था। उन्होंने कुत्ता उठा कर बटन बंद कर,

सैल निकाल कर वापिस बंद करके रख दिए। जब पिताजी अलमारी बंद करने लगे तो सक्षम ने अलमारी का दरवाजा पकड़ लिया।

''नहीं पिताजी! अभी बंद न करो, मुझे अभी और भी सामान देखना है।''

''नहीं बेटा! दादी गुस्सा करेगी। मुझे भी डांट पड़ जाएगी, तू रहने दे, बहुत देख लिया।

''बस पिताजी! बस थोड़ी देर ठहरो, एक बार और देख लेने दो कुछ।'' बार बार कहने पर पिताजी ने एक बार फिर अलमारी खोली तो उसने अलमारी में से एक थैली उठा ली। जिसमें से बाहर तक आती हुई एक पैंसिल नजर आ रही थी जिसने सिर पर एक टोपी पहने जोकर का चेहरा बना हुआ था। उसने इस समय पिताजी की कोई बात नहीं सुनी। वह पैंसिल की थैली पकड़ कर नीचे चला गया।

''दादी देखो। मैं क्या लेकर आया।'' बोलते हुए वह नीचे आंगन में खड़ी दादी के आगे थैली की तो दादी एकदम गुस्से में भड़क उठी और बोली।

''तुमने मेरी अलमारी को हाथ किससे पूछकर लगाया, ला मुझे दे इधर।'' वह भाग कर कमरे में चला गया तथा चारपाई के नीचे छुप गया। दादी आवाजें लगाती रही।

''कोई बात नहीं, अब मैं तुझे कभी कोई खिलौना नहीं दूँगी। तू इसे ही रख ले, तेरे जन्मदिन पर भी उपहार नहीं मिलेगा।''

सक्षम चारपाई के नीचे से निकल कर दादी के सामने आ खड़ा हुआ।

''अच्छा नहीं, लो वापिस लो पर मेरे जन्मदिन पर दे देना जरूर लो पकड़ो, बस खुश?''

''चल वहीं रख, जहाँ से लिया था।''

जब सक्षम सीढ़ियाँ चढ़ने लगा तो दादी उसके पीछे-पीछे चढ़ रही थी। अलमारी खुलते ही उसने थैली वहीं टिका दी, जहाँ से उठाई थी।

इस समय दादी ने सक्षम के कान पकड़ कर पूछा, ''आगे से तो नहीं लेगा मेरी अलमारी से चीजें?''

सक्षम नहीं मैं सिर हिला रहा था। फिर सहमें हुए दादी से सवाल किया, '' दादी आप यह पैंसिल, किसको दोगे?''

सुनते ही दादी को हँसी आ गई। दादी ने कुर्सी पर बैठते ही उसको गोद में बिठा लिया और अपने गले से लगाकर लाड़ करने लगी। सक्षम को कुछ भी समझ नहीं आया। वह चुप था पर दादी हंस रही थी। हंसती हुई बड़े प्यार से उसका चेहरा देख रही थी। दादी ने अलमारी खोलते हुए कहा, ''यह सब खिलौने तेरे लिए ही है, सिर्फ तेरे लिए, तू जो चाहे ले सकता है।''

सक्षम नन्हे-नन्हे हाथों से कितने ही खिलौने उठाता चूम-चूम कर अलमारी से बाहर निकालने लगा और दादी अपने छोटे से गुड्डे को उछलते-कूदते देखती खुश थी।

● अंबाला कैंट (हरि.)

दोनों चित्रों में आठ अंतर बताओ

- देवांशु वत्स

(उत्तर इसी अंक में)

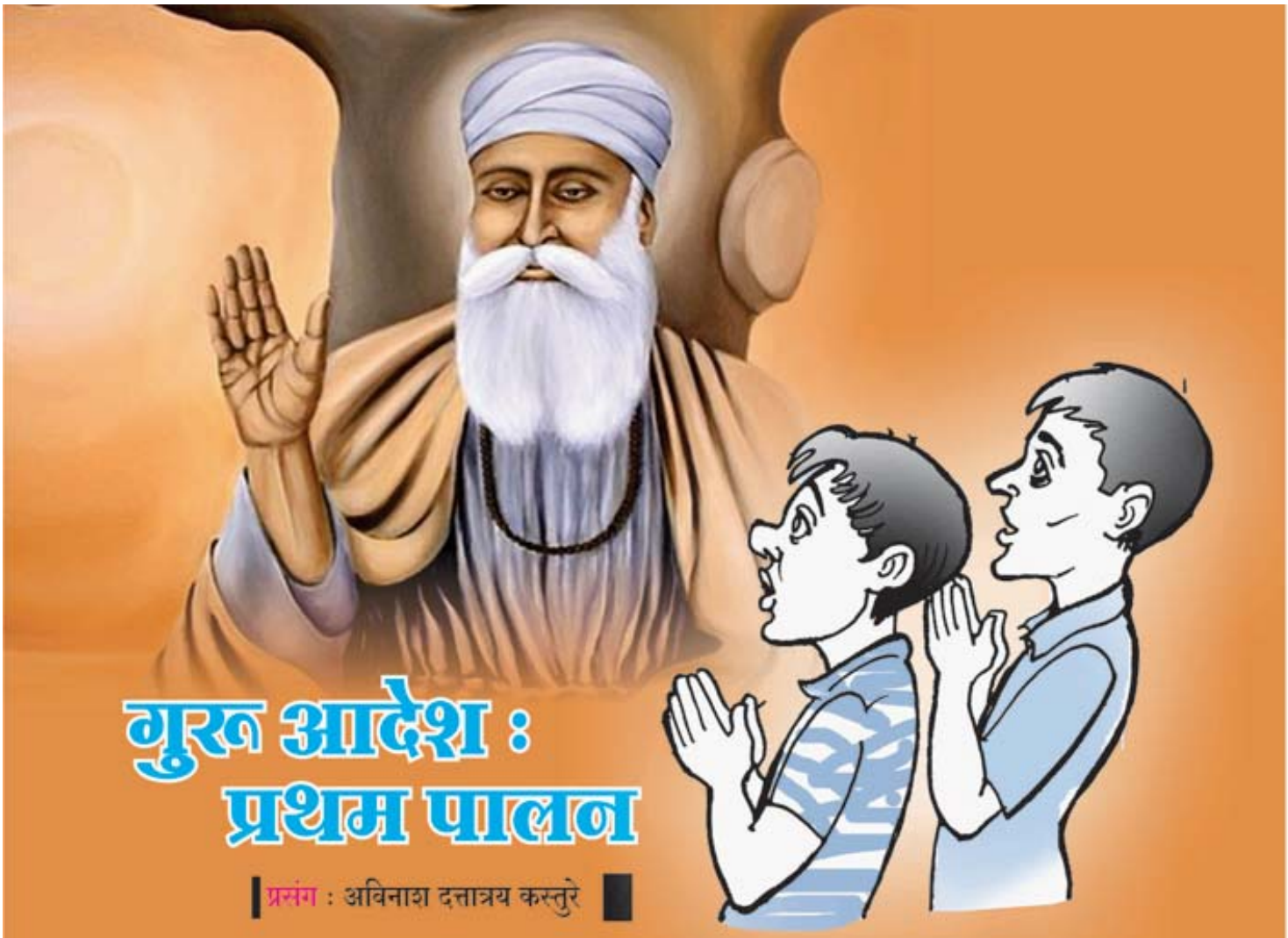

गुरु आदेश : प्रथम पालन

प्रसंग : अविनाश दत्तात्रय कस्तुरे

सिक्ख गुरु संत नानक देव जी ने अपने दो शिष्यों को दीवार बनाने का काम सौंपा।

शिष्यों ने काम शुरु किया।

दीवार- आधे से ज्यादा बनी थी तो गुरुजी ने आदेश दिया- ''इसे तोड़ दो।''

शिष्यों ने दीवार तोड़ दी- तो नानक जी ने आदेश दिया- ''फिर से बनाओ।''

दीवार थोड़ी सी बनी थी तो फिर आवाज ''तोड़ दो दीवार।''

पांचवे दिन ''फिर दीवार बनाओ कहा तो दूसरा खड़ा होकर बहस करने लगा '' यह सब क्या चल रहा है?''

आपने दो तीन बार कहा- कुछ निश्चित नहीं दिख रहा है- दीवार बनना है या नहीं मैं दीवार नहीं बनाऊंगा''

वह चला गया। पहले शिष्य ने समय में दीवार बना दी और गुरुजी के पास गया और बोला'' दीवार बन गई है।''

दूसरा शिष्य आया, बोला ''अरे! तूने दीवार क्यों बनायी? मैं ने तो गुरुजी से शंका होने पर बहस की -गिराना या बनाना।''

पहला शिष्य शांति से बोला- ''मुझे दीवार से क्या मतलब? मेरे लिये तो गुरुजी का आदेश कर्तव्य है, उन्होंने क्या बतलाया वह कर्तव्य है।

● जबलपुर (म.प्र.)

दादाजी की सहायता

चित्रकथा - देवांशु वत्स

(कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद जयंती ३१ जुलाई)

गुल्ली-डंडा

कहानी : मुंशी प्रेमचंद

हमारे अंगरेजी दोस्त मानें या न माने मैं तो यही कहूँगा कि गुल्ली-डंडा सब खेलों का राज है। अब भी कभी लड़कों को गुल्ली-डंडा खेलते देखता हूँ तो जी लोटपोट हो जाता है कि इनके साथ जाकर खेलने लगूँ। न लान की जरूरत, न कोर्ट की, न नेट की, न थापी की। मजे से किसी पेड़ से एक टहनी काट ली, गुल्ली बना ली, और दो आदमी भी आ जायें, तो खेल शुरू हो गया।

विलायती खेलों में सबसे बड़ा ऐब है कि उसके मामान महँगे होते हैं। जब तक कम से कम एक सैंकड़ा न खर्च कीजिए, खिलाड़ियों में शुमार ही नहीं हो पाता। यहाँ गुल्ली-डंडा है कि बिना हर्र-फिटकरी के चोखा रंग देता है, पर हम अंगरेजी चीजों के पीछे ऐसे दिवाने हो रहे हैं कि अपनी सभी चीजों से अरुचि हो गयी। स्कूलों में हरेक लड़के से तीन-चार रुपये सालाना केवल खेलने की फीस ली जाती है। किसी को यह नहीं सूझता कि भारतीय खेल खिलायें, जो बिना दाम-कौड़ी के खेले जाते हैं। अंगरेजी खेल उनके लिए हैं, जिनके पास धन है। गरीब लड़कों के सिर क्यों यह व्यसन मढ़ते हो? ठीक है, गुल्ली से आँख फूट जाने का भय रहता है, तो क्या क्रिकेट से सिर फूट जाने, तिल्ली फट जाने, टाँग टूट जाने का भय नहीं रहता। अगर हमारे माथे में गुल्ली का दाग आज तक बना हुआ है तो हमारे कई ऐसे दोस्त भी हैं, जो थापी को बैसाखी से बदल बैठे। यह अपनी-अपनी रुचि है। मुझे गुल्ली ही सब खेलों से अच्छी लगती है और बचपन की मीठी स्मृतियों में गुल्ली ही सबसे मीठी है।

वह प्रातःकाल घर से निकल जाना, वह पेड़ पर चढकर टहनियाँ काटना और गुल्ली-डंडे बनाना, वह उत्साह, वह खिलाड़ियों के जमघटे, वह पदना और पदाना, वह लड़ाई-झगड़े, वह सरल स्वभाव, जिसमें छूत-अछूत, अमीर-गरीब का बिलकुल भेद न रहता था, जिसमें अमीराना चोचलों की, प्रदर्शन की, अभिमान की गुंजाइश ही न थी, यह उसी वक्त भूलेगा जब...जब...। घरवालें बिगड़ रहे हैं, पिताजी चौके पर बैठे वेग से रोटियों पर अपना क्रोध उतार रहे हैं, अम्मा की दौड़ केवल द्वार तक है, लेकिन उनकी विचारधारा में मेरा अंधकारमय भविष्य टूटी हुई नौका की तरह डगमगा रहा है और मैं हूँ कि पदाने में मस्त हूँ। न नहाने की सुधि है, न खाने की। गुल्ली है तो जरा-सी, पर उसमें दुनिया-भर की मिठाइयों की मिठास और तमाशों का आनंद भरा हुआ है।

मेरे हमजोलियों में एक लड़का गया नाम का था। मुझसे दो-तीन साल बड़ा होगा। दुबला, बंदरों की सी लम्बी-लम्बी, पतली-पतली उँगलियाँ, बदरों की सी चपलता, वही झल्लाहट। गुल्ली कैसी ही हो, पर इस तरह लपकता था, जैसे छिपकली कीड़ों पर लपकती है। मालूम नहीं, उसके माँ-बाप थे या नहीं, कहाँ रहता था, क्या खाता था, पर था हमारे गुल्ली क्लब का चैम्पियन। जिसकी तरफ वह आ जाये, उसकी जीत निश्चित थी। हम सब उसे दूर से आते देख, उसका दौड़कर स्वागत करते थे और अपना गोइयाँ बना लेते थे।

एक दिन मैं और गया दो ही खेल रहे थे। वह पदा रहा था। मैं पद रहा था, मगर कुछ विचित्र बात है कि पदाने में हम दिनभर मस्त रह सकते हैं, पदना एक मिनट का भी

अखरता है। मैंने गला छुड़ाने के लिए सब चालें चली, जो ऐसे अवसर पर शास्त्र विहित न होने पर भी क्षम्य हैं, लेकिन गया अपना दाँव लिये बगैर मेरा पिंड न छोड़ता था।

मैं घर की ओर भागा। अनुनय–विनय का कोई असर न हुआ था।

गया ने मुझे दौड़कर पकड़ लिया और डंडा तानकर बोला–''मेरा दाँव देकर जाओ। पदाया तो बड़े बहादुर बनके, पदने के बेर क्यों भागे जाते हो?''

''तुम दिनभर पदाओ तो मैं दिनभर पदता रहूँ?''

''हाँ, तुम्हें दिन–भर पदना पड़ेगा।''

'' न खाने जाऊँ, न पीने जाऊँ?''

''हाँ! मेरा दाँव दिये बिना कहीं नहीं जा सकते।''

''मैं तुम्हारा गुलाम हूँ?''

''हाँ, मेरे गुलाम हो।''

''मैं घर जाता हूँ, देखूँ मेरा क्या कर लेते हो?''

'' घर कैसे जाओगे, कोई दिल्लगी है। दाँव दिया है, दाँव लेंगे।''

''अच्छा, कल मैंने अमरूद खिलाया था। वह लौटा दो।''

''वह तो पेट में चला गया।''

''निकालो पेट से। तुमने क्यों खाया मेरा अमरूद?''

''अमरूद तुमने दिया, तब मैंने खाया। मैं तुमसे माँगने थोड़े गया था।''

''जब तक मेरा अमरूद न दोगे, मैं दाँव न दूँगा।''

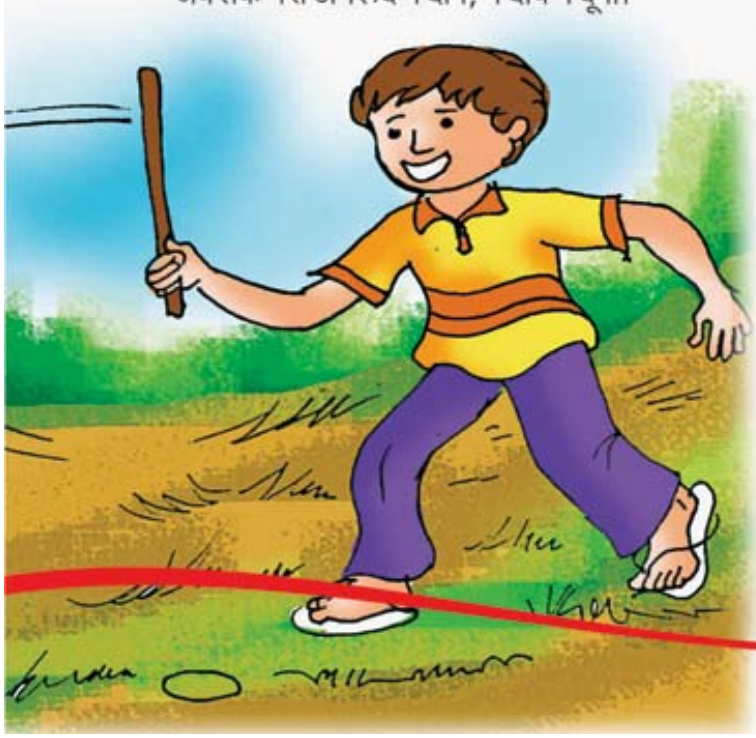

मैं समझता था, न्याय मेरी ओर है। आखिर मैंने किसी स्वार्थ से ही उसे अमरूद खिलाया होगा। कौन निःस्वार्थ किसी के साथ सलूक करता है। भिक्षा तक तो स्वार्थ के लिए ही देते हैं। जब गया ने अमरूद खाया, तो फिर उसे मुझसे दाँव लेने का क्या अधिकार है? रिश्वत देकर तो लोग खून पचा जाते हैं, यह मेरा अमरूद यों ही हजम कर जायेगा? अमरूद पैसे के पाँचवाले थे, जो गया के बाप को भी नसीब न होंगे। यह सरासर अन्याय था।

गया ने मुझे अपनी ओर खींचते हुए कहा– ''मेरा दाँव देकर जाओ, अमरूद–समरूद मैं नहीं जानता।''

मुझे न्याय का बल था। वह अन्याय पर डटा हुआ था। मैं हाथ छुड़ाकर भागना चाहता था। वह मुझे जाने न देता था। मैंने उसे दाँत काट लिया। उसने मेरी पीठ पर डंडा जमा दिया। मैं रोने लगा। गया मेरे इस अस्त्र का मुकाबला न कर सका। मैंने तुरंत आँसू पोंछ डाले, डंडे की चोट भूल गया और हँसता हुआ घर जा पहुँचा। लेकिन घर में किसी से शिकायत न की।

****

उन्हीं दिनों पिताजी का वहाँ से तबादला हो गया। नई दुनिया देखने की खुशी में ऐसा फूला कि अपने हमजोलियों से बिछुड़ जाने का बिलकुल दुःख न हुआ। पिताजी दुःखी थे। यह बड़ी आमदानी की जगह थी। अम्मा जी भी दुखी थीं यहाँ सब चीज सस्ती थीं, और मोहल्ले की स्त्रियों से घेराव सा हो गया था, लेकिन मैं मारे खुशी के फूला न समाता था। लड़कों में जीट उड़ा रहा था, वहाँ ऐसे घर थोड़ी ही होते हैं। ऐसे–ऐसे ऊँचे घर हैं कि आसमान से बातें करते हैं। वहाँ के ऐसे अंगरेजी स्कूल में कोई मास्टर लड़कों को पीटे, तो उसे जेल हो जाए। मेरे मित्रों की फैली हुई आँखें और चकित मुद्रा बतला रही थी कि मैं उनकी निगाह में कितना ऊँचा उठ गया हूँ। बच्चों में मिथ्या को सत्य बना लेने की वह शक्ति हैं, जैसे हम, जो सत्य को मिथ्या बना लेते है, क्या समझेंगे? उन बेचारों को मुझसे कितनी स्पर्धा हो रही थी। मानों कह रहे थे तुम भाग्यवान हो भाई, जाओ। हमें तो इसी ऊजड़ ग्राम में जीना भी है और मरना भी।

बीस साल गुजर गये। मैंने इंजीनियरिंग पास की और उसी जिले का दौरा करता हुआ उसी कस्बे में पहुँचा और

डाक बंगले में ठहरा। उस स्थान को देखते ही इतनी मधुर बाल–स्मृतियाँ हृदय में जाग उठीं कि मैंने छड़ी उठायी और कस्बे की सैर करने निकला। आँखें किसी प्यासे पथिक की भाँति बचपन के उन क्रीड़ा–स्थलों को देखने के लिए व्याकुल हो रही थी, पर उस परिचित नाम के सिवा वहाँ और कुछ परिचित न था। जहाँ खण्डहर था, वहाँ पक्के मकान खड़े थे। जहाँ बरगद का पुराना पेड़ था, वहाँ अब एक सुन्दर बगीचा था। स्थान की काया पलट हो गयी थी। अगर उसके नाम और स्थिति का ज्ञान न होता, तो मैं उसे पहचान भी न सकता। बचपन की संचित और अमर स्मृतियाँ बाँहें खोले अपने उन पुराने मित्रों से गले मिलने को अधीर हो रही थीं। मगर वह दुनिया बदल गयी थी। ऐसा जी होता था कि उस धरती से लिपटकर रोऊँ और कहूँ, तुम मुझे भूल गयी। मैं तो अब भी तुम्हारा वही रूप देखना चाहता हूँ।

सहसा एक खुली जगह में मैंने दो–तीन लड़कों को गुल्ली–डंडा खेलते देखा। एक क्षण के लिए मैं अपने को बिलकुल भूल गया। भूल गया कि मैं एक ऊँचा अफसर हूँ, साहबी ठाठ में, रौब और अधिकार के आवरण में।

जाकर एक लड़के से पूछा– ''क्यों बेटे, यहाँ कोई गया नाम का आदमी रहता है?''

एक लड़के ने गुल्ली–डंडा समेटकर सहमे हुए स्वर में कहा– ''कौन गया?

मैंने यों ही कहा– ''हाँ –हाँ वही। गया नाम का कोई आदमी है तो? शायद वही हो।''

''हाँ है तो।''

''जरा उसे बुला सकते हो?''

लड़का दौड़ता हुआ गया और एक क्षण में एक पाँच हाथ काले देव को साथ लिये आता दिखाई दिया। मैं दूर से ही पहचान गया। उसकी ओर लपकना चाहा था कि उसके गले लिपट जाऊँ, पर कुछ सोचकर रह गया। बोला–''कहो गया! मुझे पहचानते हो?''

गया ने झुककर सलाम किया– ''हाँ मालिक! भला पहचानूँगा क्यों नहीं। आप मजे में हो?''

''बहुत मजे में। तुम अपनी कहो।''

''डिप्टी साहब का साईस हूँ।''

''मतई, मोहन, दुर्गा सब कहाँ है? कुछ खबर है?''

''मतई तो मर गया, दुर्गा और मोहन दोनों डाकिया हो गये हैं। आप?''

''मैं तो जिले का इंजीनियर हूँ।''

''सरकार तो पहले ही बड़े जहीन थे?''

''अब कभी गुल्ली–डंडा खेलते हो?''

गया ने मेरी ओर प्रश्न भरी आँखों से देखा– ''अब गुल्ली–डंडा क्या खेलूँगा सरकार, अब तो धंधे से छुट्टी नहीं मिलती।''

''आओ, आज हम–तुम खेलें। तुम पदाना, हम पदेंगे। तुम्हारा एक दाँव हमारे ऊपर है। वह आज ले लो।''

गया बड़ी मुश्किल से राजी हुआ। वह ठहरा टके का मजदूर, मैं एक बड़ा अफसर। हमारा और उसका क्या जोड़? बेचारा झेंप रहा था। लेकिन मुझे भी कुछ कम झेंप न थी, इसलिए नहीं कि मैं गया के साथ खेलने जा रहा था, बल्कि इसलिए कि लोग इस खेल को अजूबा समझकर इसका तमाशा बना लेंगे और अच्छी खासी भीड़ लग जाएगी। उस भीड़ में वह आनंद कहाँ रहेगा, पर खेले बगैर तो रहा नहीं जाता। आखिर निश्चय हुआ कि दोनों जने बस्ती से बहुत दूर खेलेंगे और बचपन की उस मिठाई को खूब रस ले लेकर खायेंगे। मैं गया को लेकर डाक बंगले पर आया और मोटर में बैठकर दोनों मैदान की ओर चले। साथ में एक कुल्हाड़ी ले ली। मैं गंभीर भाव धारण किये हुए था, लेकिन गया इसे अभी तक मजाक ही समझ रहा था। फिर भी उसके मुख पर उत्सुकता या आनंद का कोई चिह्न न था। शायद वह हम दोनों में जो अंतर हो गया था, यही सोचने में मगन था।

मैंने पूछा– ''तुम्हें कभी हमारी याद आती थी गया? सच कहना।''

गया झेंपता हुआ बोला– ''मैं आपको याद करता हजूर, किस लायक हूँ। भाग में आपके साथ कुछ दिन खेलना बदा था, नहीं मेरी क्या गिनती?''

मैंने कुछ उदास होकर कहा– ''लेकिन मुझे तो बराबर, तुम्हारी याद आती थी। तुम्हारा वह डंडा, जो तुमने तानकर जमाया था, याद है न?

गया ने पछताते हुए कहा– '' वह लड़कपन था सरकार, उसकी याद न दिलाओ।''

''वाह! वह मेरे बाल जीवन की सबसे रसीली याद है। तुम्हारे उस डंडे में जो रस था, वह तो अब न आदर सम्मान में पाता हूँ, न धन में।''

इतनी देर में हम बस्ती से कोई तीन मील निकल आये। चारों तरफ सन्नाटा है। पश्चिम ओर कोसों तक भीमताल फैला हुआ है, जहाँ आकर हम किसी समय कमल पुष्प तोड़ ले जाते थे और उसके झुमक बनाकर कानों में डाल लेते थे। जेठ की संध्या केसर में डूबी चली आ रही है। मैं लपककर एक पेड़ पर चढ़ गया और एक टहनी काट लाया। चटपट गुल्ली–डंडा बन गया। खेल शुरू हो गया। मैंने गुच्ची में गुल्ली रखकर उछाली। गुल्ली गया के सामने से निकल गयी। उसने हाथ लपकाया, जैसे मछली पकड़ रहा हो। गुल्ली उसके पीछे जाकर गिरी। यह वही गया है, जिसके हाथों में गुल्ली जैसे आप ही आकर बैठ जाती थी। वह दाहिने बाएँ कहीं हो, गुल्ली उसकी हथेली में ही पहुँचती थी। जैसे गुल्लियों पर वशीकरण डाल देता हो, नयी गुल्ली, पुरानी गुल्ली, छोटी गुल्ली, बड़ी गुल्ली, नोकदार गुल्ली, सपाट गुल्ली सभी उससे मिल जाती थीं। जैसे उसके हाथों में कोई चुम्बक हो, गुल्लियों को खींच लेता हो, लेकिन आज गुल्ली को उससे वह प्रेम नहीं रहा। फिर तो मैंने पदाना शुरु किया। मैं तरह–तरह की धाँधलियाँ कर रहा था। अभ्यास की कसर बेईमानी से पूरी कर रहा था। हुच जाने पर भी डंडा खेले जाता था। हालाँकि शास्त्र के अनुसार गया की बारी आनी चाहिए थी। गुल्ली पर ओछी चोट पड़ती और वह जरा दूर पर गिर पड़ती, तो मैं झपटकर उसे खुद उठा लेता और दोबारा टाँड़ लगाता। गया यह सारी बेकायदगियाँ देख रहा था। पर कुछ न बोलता था, जैसे उसे वह सब कायदे कानून भूल गये। उसका निशाना कितना अचूक था। गुल्ली उसके

हाथ से निकलकर टन से डंडे से टकरा जाना ,लेकिन आज वह गुल्ली डंडे में लगती ही नहीं। कभी दाहिने जाती है, कभी बांयें, कभी आगे, कभी पीछे।

आध घंटे पदाने के बाद एक बार गुल्ली डंडे में आ लगी। मैंने धाँधली की गुल्ली–डंडे में नहीं लगी। बिलकुल पास से गयी लेकिन लगी नहीं।

गया ने किसी प्रकार का असंतोष प्रकट नहीं किया।

''न लगी होगी।''

''डंडे में लगती तो क्या मैं बेईमानी करता?''

''नही भैया! तुम भला बेईमानी करोगे?''

बचपन में मजाल था कि मैं ऐसा घपला करके जीत बचता। यही गया गर्दन पर चढ़ बैठता, लेकिन आज मैं उसे कितनी आसानी से धोखा दिये चला जाता था। गधा है! सारी बातें भूल गया।

सहसा गुल्ली फिर डंडे से लगी और इतनी जोर से लगी, जैसे बन्दूक छूटी हो। इस प्रमाण के सामने अब किसी तरह की धांधली करने का साहस मुझे इस वक्त भी न हो सकता, लेकिन क्यों न एक बार सबको झूठ बताने की चेष्टा करूँ? मेरा हरज ही क्या है। मान गया तो वाह–वाह, नहीं दो–चार हाथ पदना ही तो पड़ेगा।

अँधेरे का बहाना करके जल्दी से गला छुड़ा लूँगा। फिर कौन दाँव देने आता है।

गया ने विजय के उल्लास में कहा– ''लग गयी, लग गयी। टन से

बोली।''

मैनें अनजान बनने की चेष्टा करके कहा– ''तुमने लगते देखा? मैंने तो नहीं देखा।''

''टन से बोली है सरकार।''

''और जो किसी ईंट से टकरा गयी हो?''

मेरे सुख से यह वाक्य उस समय कैसे निकला, इसका मुझे खुद आश्चर्य है। इस सत्य को झुठलाना वैसा ही था, जैसे दिन को रात बताना। हम दोनों ने गुल्ली को डंडे में जोर से लगते देखा था, लेकिन गया ने मेरा कथन स्वीकार कर लिया।

''हाँ, किसी ईंट में लग गयी होगी। डंडे में लगती तो इतनी आवाज न आती।''

मैंने फिर पदाना शुरु कर दिया, लेकिन इतनी प्रत्यक्ष धाँधली कर लेने के बाद गया की सरलता पर मुझे दया आने लगी, इसलिए जब तीसरी बार गुल्ली डंडे में लगी, तो मैंने बड़ी उदारता से दाँव देना तय कर लिया।

गया ने कहा– ''अब तो अंधेरा हो गया है भैया! कल पर रखो।''

मैंने सोचा, कल बहुत सा समय होगा, यह न जाने कितनी देर पदाए, इसलिए इसी वक्त मुआमला साफ कर लेना होगा।

''नहीं, नहीं। अभी बहुत उजाला है। तुम अपना दाँव ले लो।''

''गुल्ली सूझेगी नहीं।''

''कुछ परवाह नहीं।''

गया ने पदाना शुरु किया, पर उसे अब बिलकुल अभ्यास न था। उसने दो बार टाँड़ लगाने का इरादा किया, पर दोनों ही बार हुच गया। एक मिनिट से कम में वह दाँव खो बैठा। मैंने अपनी हृदय की विशालता का परिचय दिया।

''एक दाँव और खेल लो। तुम तो पहले ही हाथ में हुच गये।''

''नहीं भैया! अब अँधेरा हो गया।''

''तुम्हारा अभ्यास छूट गया। कभी खेलते नहीं?''

''खेले का समय कहाँ मिलता है भैया!''

हम दोनों मोटर पर जा बैठे और चिराग जलते जलते पड़ाव पर पहुँच गए। गया चलते–चलते बोला– ''कल यहाँ गुल्ली–डंडा होगा। सभी पुराने खिलाड़ी खेलेंगे। तुम भी आओगे? जब तुम्हें फुरसत हो, तभी खिलाड़ियों को बुलाऊँ।''

मैंने शाम का समय दिया और दूसरे दिन मैच देखने गया कोई दस–दस आदमियों की मंडली थी। कई मेरे लड़कपन के साथी निकले। अधिकांश युवक थे, जिन्हें मैं पहचान न सका। खेल शुरू हुआ। मैं मोटर पर बैठा–बैठा तमाशा देखने लगा। आज गया का खेल, उसका वह नैपुण्य देखकर मैं चकित हो गया। टाँड़ लगाता, तो गुल्ली आसमान से बातें करती। कल की सी वह झिझक, वह हिचकिचाहट, वह बेदिली आज न थी। लड़कपन में जो बात थी, आज उसने प्रौढ़ता प्राप्त कर ली थी। कहीं कल इसने मुझे इस तरह पदाया होता, तो मैं जरूर रोने लगता। उसके डंडे की चोट खाकर गुल्ली दो सौ गज की खबर लाती थी।

पदने वालों में एक युवक ने कुछ धाँधली की। उसने अपने विचार में गुल्ली लपक ली थी। गया का कहना था गुल्ली जमीन में लगकर उछली थी। इस पर दोनों में ताल ठोकने की नौबत आयी। युवक दब गया। गया का तमतमाया हुआ चेहरा देखकर डर गया। अगर वह दब न जाता, तो जरूर मार पीट हो जाती।

मैं खेल में न था, पर दूसरों के इस खेल में मुझे वही लड़कपन का आनन्द आ रहा था, जब हम सब कुछ भूलकर खेल में मस्त हो जाते थे। अब मुझे मालूम हुआ कि कल गया ने मेरे साथ खेला नहीं केवल खेलने का बहाना किया। उसने मुझे दया का पात्र समझा। मैंने धाँधली की, बेईमानी की, पर उसे जरा भी क्रोध न आया। इसलिए कि वह खेल न रहा था, मुझे खेला रहा था, मेरा मन रख रहा था। वह मुझे पदाकर मेरा कचूमर नहीं निकालना चाहता था। मैं अब अफसर हूं। यह अफसरी मेरे और उसके बीच में दीवार बन गयी है। मैं अब उसका लिहाजा पा सकता हूँ, अदब पा सकता हूँ सहचर्य नहीं पा सकता। लड़कपन था, तब मैं उसका समकक्ष था। यह पद पाकर अब मैं केवल उसकी दया के योग्य हूँ। वह मुझे अपना जोड़ नहीं समझता। वह बड़ा हो गया हैं, मैं छोटा हो गया हूँ।

कारे बदरा पानी दे

कविता : कृष्ण 'शलभ'

पानी दे रे, कारे बदरा पानी दे
बरसो छम-छम जाना मत थम
सूख रही फसलों को नई जवानी दे

सूखे सारे ताल तलैया, बरसो राम
कब से प्यासी धरती मैया बरसो राम
बूंदें नाचें ता-ता थैया बरसो राम
गुम-सुम है कागज की नैया बरसो राम

आ हमको गुड़ धानी दे, रे पानी दे

चिड़िया भूली रेत नहाना, बरसो राम
कहाँ गया दस्तूर पुराना, बरसो राम
उठो नींद से बिस्तर छोड़ो, बरसो राम
देखो करना नहीं बहाना, बरसो राम

फसलें ओढ़े जिसे, चुनरिया धानी दे

बहुत हो चुका जल्दी आओ, बरसो राम
आओ झूमो, नाचो-गाओ, बरसो राम
अगर शिकायत कुछ है, खुल कर हमें कहो
लेकिन छम-छम नाच दिखाओ, बरसो राम

कोई फाके करे ना, दाना पानी दे।

• सहारनपुर (उ.प्र.)

मोहरों की थैली

''ओह शिव! क्या तुम समचुम पत्थर हो। मेरा जवाब बेटा मृत्यु शय्या पर पड़ा है। मैं उसे बचाने के लिए हकीम को देने के लिए सौ मोहरें कहाँ से लाऊं?'' केशव शास्त्री की आँखों से आंसुओं की धारा फूट निकली।

मूर्ति न हिली न डुली। दुःखी ब्राह्मण ने शिवलिंग पर सिर पटक दिया– ''परमात्मा! मेरी जान ले लो। मेरे बेटे को चंगा कर दो।''

रात के सन्नाटे में रोते–रोते वह शिथिल पड़ गया तो बुरहानपुर से बाहर जंगल में स्थित मंदिर में फिर सन्नाटा छा गया।

कुछ देर इसी प्रकार बीता। फिर द्वार के पास दो व्यक्तियों के बीच फुसफुसाहट की आवाज आयी। एक व्यक्ति कह रहा था–''महाराज! आपको बुखार है। आज रात आप यहीं विश्राम कर लें।''

''लेकिन हीरोजी! यह बुरहानपुर है। दक्षिण में मुगलों का खास गढ़। यहाँ रुकना ठीक नहीं होगा।'' दूसरा स्वर था।

घने अंधेरे में दोनों बात करने वालों को मूर्ति पर सिर डाले जमीन पर पड़े व्यक्ति का कोई भान नहीं हुआ। लेकिन अर्द्धअचेत व्यक्ति के कानों में यह आवाज चेतना ले आई। शास्त्री को समझते देर न लगी हो न हो यह मराठा राजा शिवाजी ही हैं, जिसके बारे में अभी कल घोषणा हुई है कि वह आगरा से आया है और उसके बारे में सूचना देकर बन्दी बनवा देने वाले को खास ईनाम दिया जाएगा। उसने सोचा कि अब मेरे बेटे के प्राण बच जायेंगे। प्रभु ने मेरी करुण पुकार सुन ली।

शास्त्री चुपके से मंदिर से निकला और सीधे घर की ओर भागा।

*****

गरीब ब्राह्मण का घर। बेटा अचेत पड़ा। सिरहाने ब्राह्मण की पत्नी बैठी है, पैरों की तरह वधू उदास सिर

झुकाए। बेचारी अभी किशोरावस्था को भी नहीं लांघ पायी थी। पति के प्रति उसका प्रेम बीच-बीच में सिर उठाकर डाली गयी नजरों में मुखर हो उठता है।

ब्राह्मण ने तेजी से आकर दरवाजा खोला। ब्राह्मणी को पास बुलाया। उसके चेहरे पर आशा की उमंग दौड़ आयी थी। ब्राह्मणी पास गयी तो उसने पूरी बात कह दी।

'शिवाजी!' बहू चौंक गई। उसने ब्राह्मण की बात सुन ली थी। ब्राह्मण जल्दी-जल्दी वापस घर से बाहर चला गया। बहू के अन्तर में तूफान घुमड़ने लगा- 'शिवाजी जो मंदिरों को तोड़ने और आर्य कन्याओं का अपहरण करने वालों से युद्ध करता है, उसे पकड़वाना यह देश धर्म के विरुद्ध कार्य? क्या इसलिए कि उससे मेरे सुहाग की रक्षा हो जाएगी। निसंदेह, मेरा सुहाग मेरे लिए सब कुछ है, लेकिन देश के लिए शिवाजी की जान, उससे ज्यादा महत्व की है। मैं ऐसा कदापि नहीं होने दूंगी।

बाला चुपके से उठी और रात के अंधेरे में बेतहाशा भागती चली सीधे मंदिर की ओर। शिवाजी महाराज ने उसकी कहानी सुनी तो आँखें आर्द्र हो गयीं।

ब्राह्मण सैनिकों को लेकर मंदिर पहुंचा, तब तक मंदिर खाली हो चुका था। उसने हताश होकर मूर्ति पर माथा पटक दिया। लेकिन यह खनक कैसी। उसके हाथ शिव के अर्घे पर रखी मोहरों की एक थैली पर अनायास ही जा टिके थे। कौन दे गया यह धन शिवाजी या शिवजी। दोनों में से किसी ने भी दिया हो पाने वाले और लेने वाले दोनों में कोई अंतर नहीं पड़ता। वधू को उसका सुहाग मिला। ब्राह्मण को धन और देश को जीवन।

(निरंतर अगले अंक में)

संस्कृति प्रश्नमाला

(०१) जनकपुरी में शिव जी का धनुष तोड़ने के बाद श्रीराम ने किनका गर्व तोड़ा?

(०२) महाभारत युद्ध का आँखों देखा हाल धृतराष्ट्र को किसने सुनाया?

(०३) दक्षिण पूर्व एशिया के प्रसिद्ध फूनान साम्राज्य की स्थापना दक्षिण भारत के किस ब्राह्मण महावीर ने की थी?

(०४) घुश्मेश्वर के पवित्र ज्योतिर्लिंग को राजस्थान में भी माना जाता है। किस स्थान पर है यह ज्योतिर्लिंग?

(०५) भारतीय कालगणना के हिसाब से इस समय कौनसा मन्वन्तर चल रहा है?

(०६) सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य का विवाह यूनानी कन्या हेलन से भी हुआ था। हेलन के पिता कौन थे?

(०७) इलेक्ट्रान (पदार्थ के सबसे सूक्ष्म कण) कण भी हैं और तरंग भी हैं, यह सिद्धांत प्राचीन भारत के किस वैज्ञानिक ने बताया?

(०८) ग्वालियर दुर्ग के नीचे अंग्रेजों से प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में युद्ध करते हुए कौन श्रेष्ठ योद्धा वीरगति को प्राप्त हुआ?

(९) मेवाड़ के किस राजकुमार को बचाने के लिए पन्नाधाय ने अपने पुत्र को बलिदान कर दिया?

(१०) वे इतिहासकार कौन थे जो आजाद हिन्द फौज की ओर से भी लड़े थे?

(उत्तर इसी अंक में) (साभार : पाथेय कण)

छोटे से बड़ा

छतरी ले रिमझिम वर्षा में गुड़िया निकली पड़ी हैं
बतलाना है तुमको बच्चों किससे कौन बड़ी है।

(उत्तर इसी अंक में)

घुंघरुओं का रहस्य

कहानी : प्रज्ञा गौतम

बरसात की रात। लगातर मूसलाधार बारिश हो रही थी। बाहर घटाटोप अंधेरा था। रह रहकर बादलों के सीने को चीरती हुई रेखा सी बिजली चमक उठती और फिर बादलों की कर्ण भेदी घड़घड़ाहट। आंधी और बारिश के साथ ही छात्रावास की बिजली चली गई थी।

कान्हा अपने बिस्तर में दुबका पड़ा था। भय से उसके हृदय की धड़कन तेज हो गई थी। लगता था जैसे किसी ने हृदय को मुट्ठी में भींच रखा हो। पलंग के पास ही उसके पढ़ने की मेज और कुर्सी लगी थी। मेज पर आपातकालीन बिजली रखी थी, जिसकी रेशनी अब धीमी हो चली थी। डोरी पर लटके कपड़ों के हिलने से दीवार पर विचित्र-विचित्र आकृतियाँ बन रहीं थीं। धीरे-धीरे बारिश थमने लगी। स्याह बादलों की ओट से निकलता चंद्रमा भूतहा लग रहा था। उसके कमरे की खिड़की छात्रावास के पीछे की तरफ खुलती थी। खिड़की से वह ठूँठ, चाँदनी में नहाया हुआ, स्पष्ट नजर आने लगा और फिर...छन...छन...छन...

वहीं घुंघरुओं की आवाज!

कान्हा दहशत से भर गया। उसने घड़ी पर नजर डाली, १२बजे थे। उसने आवाज पर ध्यान केन्द्रित किया। कहीं यह बरसाती कीड़े या झींगूर की आवाज तो नहीं?

नहीं-नहीं, यह तो घुंघरुओं की ही आवाज है। कान्हा पसीने से नहा गया था। अब इतनी रात को किस कमरे के दरवाजे पर दस्तक दे। अंधेरे में उसकी बाहर निकलने की हिम्मत नहीं हुई। थोड़ी देर बाद बिजली आ गई थी। उसने खिड़की बंद कर दी। पंखे की हवा में थोड़ी देर में उसे नींद आ गई।

इसी सत्र में वह इस छात्रावास में रहने आया है। जुलाई माह मे। उसके गाँव में कक्षा ८ के बाद विद्यालय नहीं है। उसके पिता समृद्ध किसान हैं। उन्होंने आगे की पढ़ाई के लिए उसको छात्रावास भेज दिया है। कान्हा पढ़ने में बहुत तेज है और निडर भी। उसने भी शीघ्र ही सभी अध्यापकों को अपनी बुद्धिमत्ता से प्रभावित कर लिया था। पर इस घटना ने उसको भयाक्रांत कर दिया है।

छात्रावास और विद्यालय, इस छोटे से शहर के बाहरी भाग में स्थित हैं। दोनों इमारतें एक बड़े परिसर में पास-पास बनी हुई हैं। छात्रावास के सामने सुन्दर बगीचा है पर पीछे की जमीन पर जंगली झाड़ियाँ और वृक्ष उगे हुए हैं।

शुरूआत में उसे जो कमरा मिला था, उसमें उसके साथ उसका सहपाठी नीलेश भी था। लेकिन धीरे-धीरे उसको लगने लगा कि यहाँ उसकी पढ़ाई बाधित हो रही है।

नीलेश के शरारती दोस्त नित्य ही कमरे में हँगामा और शोर-शराबा मचाते।

फिर उसने अधीक्षक से कहकर यह कोने का छोटा सा कमरा ले लिया था। इसमें एक ही बिस्तर था। अब उसकी पढ़ाई सुचारु रूप से चलने लगी थी। छात्रावास के ज्यादातर लड़के पैसे वाले और उद्दंड स्वभाव के थे। कान्हा उनसे कम ही बात करता, वह अपनी पढ़ाई पर ध्यान देता बस।

फिर एक घटना हो गई थी...

भरी दोपहर में कुछ लड़के चौकीदार की निगाह बचाकर पीछे की तरफ स्थित जामुन के पेड़ पर चढ गए थे। एक लड़का कमजोर डाल पर पैर रखते ही नीचे गिर पड़ा। वह मूर्च्छित हो गया था। लड़के चौकीदार को बुलाकर लाए। वह तो गनीमत रही कि लड़के को शीघ्र ही होश आ गया। उन लड़कों को छात्रावास से बहुत डॉट पड़ी थी। शाम को डॉक्टर आए थे। उन्होंने लड़के की जांच की और कहा, कोई गंभीर बात नहीं है, मामूली चोटें हैं। मूर्च्छा तो भय और रक्तचाप कम होने की वजह से आ गई होगी। वह लड़का एक-दो बार प्रार्थना में भी मूर्च्छित हो गया तो उसके पिता उसको यहाँ से ले गए।

उस दिन शाम को वे सब लड़के रामहेत काका (चौकीदार) को घेरे बैठे थे। रामहेत उनको कहानियाँ सुना रहा था। ''काका, कोई भूत की कहानी सुनाओ न।'' विनोद

बोला था।

''ई छात्रावास के पिछवाड़े भी तो चुड़ैल को वास है।'' रामहेत ने रहस्यमय ढंग से कहा। ''अच्छा!!'' लड़कों की आँखें भय और आश्यर्च से फैल गई थीं।

''ई जामुन के पास वालो पीपल के ठूँठ पे। पास के खेत वाले रघुवीर जी बता रहे एक दिन। जिसने बी काटने की कोशिश की वो ही चल बसा। घुँघरुओं की छन–छन आवाज आवै है यहाँ। मुँह अंधेरे खेत पे आयी औरतन ने सुनी उ आवाज कई बार।''

कान्हा को ऐसी बातों पर यकीन नहीं था। पर दो दिन बाद छात्रावास की बिजली चली गई तब उसने भी सुनी वह आवाज... और तब से ही यह सिलसिला जारी है। भय से वह पढ़ाई भी ठीक तरह से नहीं कर पा रहा था।

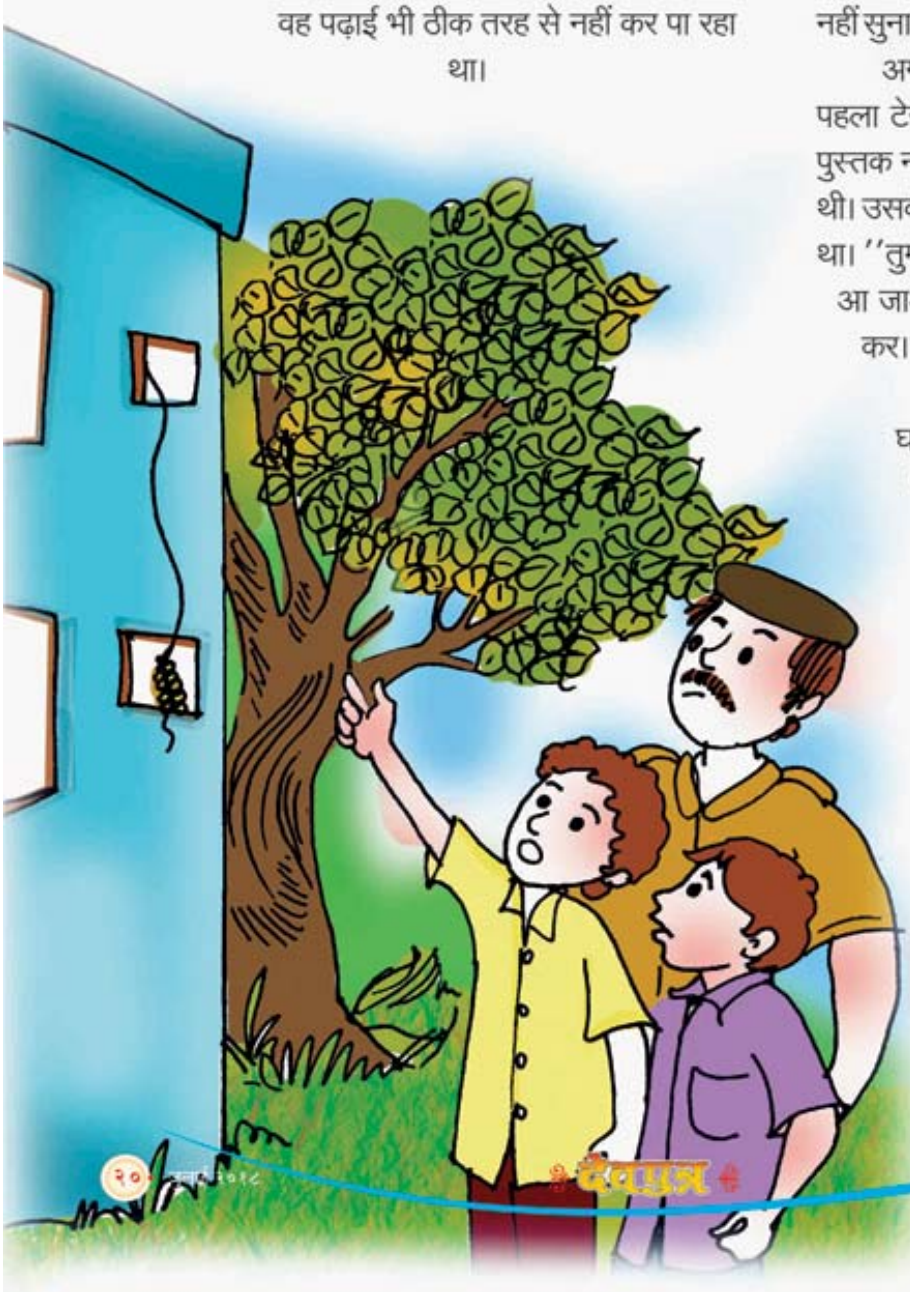

उसने अधीक्षक से शिकायत की तो उल्टा उसे ही डाँट पड़ी थी। ''तुम समझदार बच्चे होकर भी ऐसी बात करते हो, कान्हा?'' रामहेत काका भी बता रहे थे यह बात।'' फिर रामहेत काका को भी बहुत डाँट पड़ी थी।

''तुम बच्चों को डराते हो, रामहेत? मैंने प्रबंधक जी से शिकायत कर दी तो तुम्हारी नौकरी जाती रहेगी।'' रामहेत ने गिड़गिड़ाकर माफी माँग ली थी।

कान्हा अनमना रहने लगा था। हॉस्टल में माधव नाम के लड़के से उसकी थोड़ी मित्रता हुई थी। माधव ग्यारहवीं में पढ़ता था, लंबा–चौड़ा और दबंग लड़का था साथ में समझदार भी। उसने माधव को बताई यह बात। ''तुम्हारा भ्रम होगा कान्हा। मुझे तो यहाँ तीसरा साल है, मैंने तो कुछ नहीं सुना।''

अगस्त आ गया था। परसों से टेस्ट शुरु होने वाले थे। पहला टेस्ट गणित का ही था और कान्हा को गणित की पुस्तक नहीं मिल रही थी। कहाँ गई? अलमारी में तो रखी थी। उसकी आँखों में आँसू आ गए थे। शाम को माधव मिला था। ''तुम ऐसा करो, जब तक टेस्ट चलते हैं, मेरे कमरे में आ जाओ। गणित की पुस्तक मैं ला दूँगा किसी से माँग कर।'' उसने दिलासा दिया।

''टेस्ट के बाद देखते हैं इस चुड़ैल को। तुम घबराओ मत। ''कान्हा को बहुत राहत मिली थी। १५–२० दिन से बिलकुल पढ़ाई नहीं हो रही थी।

चार दिन बाद पीपल के ठूँठ पर अटकी पुस्तक की सूचना चपरासी ने दी थी। चपरासी ने पुस्तक उतार दी थी वह पर वह बुरी तरह फट गई थी।

अभी कुछ दिनों पूर्व अलमारी से लड्डूओं का डिब्बा जो गाँव से आया, वो भी गायब हुआ था। ''जरूर छात्रावास के भुक्खड़ लड़कों की शरारत होगी। चुड़ैल लड्डू खाकर क्या करेगी।'' उसने मन की मन खुद को समझाया था। उसी दिन पीछे नाली में वह डिब्बा भी मिल गया था।

टेस्ट खत्म हो गए थे। वापस अपने कमरे में जाने की कान्हा की हिम्मत नहीं हो रही थी। वह माधव के कमरे में हमेशा तो रह

नहीं सकता। वहाँ तो उसका सहपाठी है। माधव के बिस्तर पर ही सोया था वह किसी तरह ४–५ दिन।

''माधव, एक दिन मेरे कमरे में रहकर देखो। कुछ गड़बड़ है उसमें। मैं अकेला उस कमरे में बिलकुल नहीं रह सकता।''

''ठीक है कान्हा, देखते हैं क्या गड़बड़ है वहाँ।'' माधव अपनी पुस्तकें लेकर कान्हा के कमरे में आ गया था।

''इतना छोटा कमरा है। खिड़की खोलो तो कुछ हवा आए।'' उसने आते ही कहा। ''नहीं, नहीं मत खोलना खिड़की। इस खिड़की के बिलकुल सामने ही तो वह पेड़ है।'' कान्हा बोला।

''अरे तुम्हारे खिड़की बंद करने से क्या घुंघरुओं की आवाज बंद हुई? देखे तो सही बाहर क्या है?'' और माधव से खिड़की खोल दी।

चंद्रमा और तारों की हल्की रोशनी में, पीपल का वो ठूंठ और भी सफेद और चमकदार लग रहा था। शायद उस पर उल्लुओं का बसेरा था। खिड़की से ठंडी हवा के झोंके के साथ जंगली फूलों की भीनी भनी खुशबू अंदर प्रवेश कर गई। ''वाह कान्हा! मज आ गया।'' जीव–विज्ञान का विद्यार्थी माधव इस दृश्य को देखकर उछल पड़ा।

दोनों साथ–साथ पढ़ते रहे। कान्हा की नजर बार–बार घड़ी की सूइयों पर पर जाती। आखिर घड़ी ने बारह बजाए। और... और वहीं आवाज छन–छन–छन। बिजली जली हुई थी। माधव ने अपना ध्यान केन्द्रित किया, आवाज कहाँ से आ रही है? शायद बाहर से? उसने खिड़की से बाहर देखा। हवा से हिलती हुई उबड़–खाबड़ झाड़ियाँ डरावनी लग रहीं थीं।

छन–छन–छन। फिर वही आवाज। खिड़की के पास सटे हुए माधव को लगा कि आवाज कहीं दूर से नहीं आ रही बल्कि बिल्कुल पास से ही जैसे कमरे में ही कोई हो।

''आवाज ऊपर से आ रही है। शायद रोशनदान से।'' मेज की किताबें हटा के माधव उस पर चढ गया। पाँच फुट दस इंच लंबा माधव रोशनदान तक पहुँच गया था।

''ओह! तो यह है चुड़ैल।'' क्या? वहाँ ऊपर? कान्हा आश्चर्य से बोला। माधव नीचे उतर गया था।

''रोशनदान में घुंघरू हैं। एक डोरी से बंधे हुए। उनका रहस्य अब कल पता करेंगे।''

कान्हा ने राहत की सांस ली। उसके सिर से डर का साया उतर गया था अब कल पता करेंगे। बाकी था तो केवल आश्चर्य।

अगले दिन दोनों दोस्त सुबह–सुबह ही रामहेत काका को लेकर छात्रावास के पीछे गए। कान्हा के कमरे के रोशनदान से आती हुई एक सफेद पतली डोरी जो सफेद दीवार पर बमुश्किल ही दिखाई देती थी, दीवार से सटी हुई आगे तक जा रही थी वे तीनों डोरी के सहारे सहारे आगे बढ़ते गए। डोरी कमरा नं. ६ के रोशनदान में प्रवेश कर गई थी।

''यह तो नीलेश का कमरा है।'' कान्हा और माधव चौंक पड़े थे। ''तो यह माजरा है।'' माधव सारी बात समझ गया था।

''तुम कक्षा में अव्वल हो इस कारण नीलेश पहले ही तुमसे ईर्ष्या रखता था, फिर तुमने उसकी और उसके दोस्तों की शिकायत कर के कमरा बदल लिया इसलिए वह तुमसे चिढ़ा हुआ था। फिर उस दिन रामहेत काका की घुंघरुओं वाली चुड़ैल की कहानी सुनकर उसके खुराफाती दिमाग में यह विचार आया होगा।'' माधव ने निष्कर्ष निकाल लिया था।

''ओह! पर उसको कब इतना समय मिल गया मेरे कमरे में जाकर यह सब करने का?''

''तुम बहुत लापरवाह हो कान्हा! तुम नहाने जाते हो या खाना खाने जाते हो, तब क्या ताला लगाते हो कमरे का?''

''नहीं न। तुम्हारे लड्डू गायब हुए, किताब गायब हुई, फिर भी तुम नहीं संभले। यह छात्रावास है, यहाँ सभी तरह के लड़के होते हैं। सतर्क रहो भाई!''

काका को साथ लेकर फिर वे दोनों अधीक्षक के पास गए ओर सारी बात बताई। अधीक्षक ने भी कमरे के पीछे जाकर उस डोरी को देखा।

उन्होंने उसी दिन फोन पर नीलेश और उसके दोस्त के पिता को सारी बात बताई।

दोनों लड़कों को छात्रावास से निष्कासित कर दिया गया।

● कोटा (राज.)

अपने कलाम

प्रसंग : रुद्रप्रकाश गुप्त 'सरस'

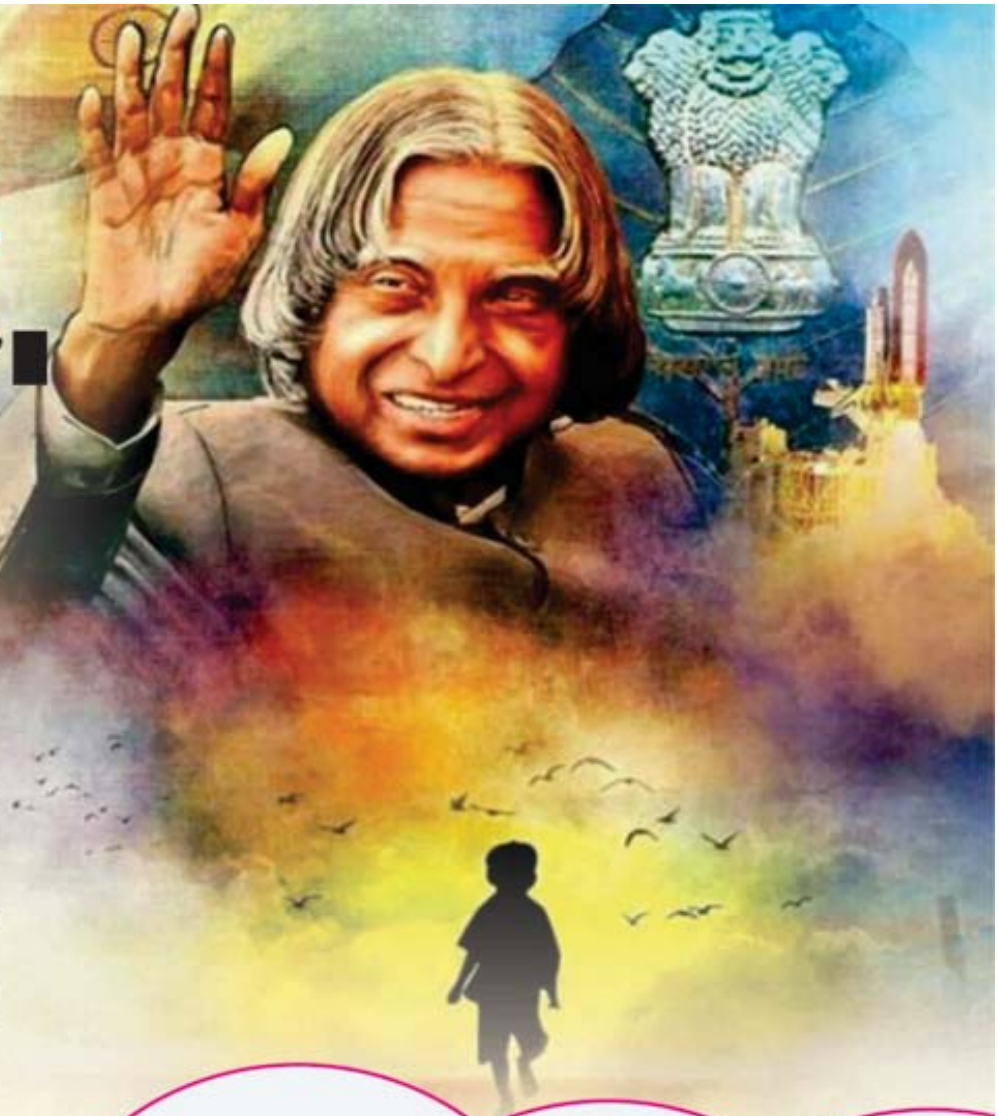

पीछे मुड़कर नहीं देखते,
जिनको आगे बढ़ना।
संभव कहां बिना दुख झेले,
ऊँचाई पर चढ़ना।।

ऐसे ही अपने कलाम थे,
दृढ़ संकल्पों वाले।
साधक जीवन पथ के पक्के,
अपना धैर्य संभाले ।।

बचपन के अभाव उनको कब,
रोक कहीं पर पाये।
श्रम की क्षमता को पहिचाना,
गीत प्रगति के गाये।।

रामेश्वरम् तीर्थ की धरती,
साक्षी रही तुम्हारी।
भारत माँ के मंदिर के तुम,
अनुपम बने पुजारी।।

शुचिता, क्षमा, दया को माना,
बलवानों का भूषण।
नित्य देश की रक्षा में थे,
नये-नये अन्वेषण।।

रहे राष्ट्रपति पर घमण्ड से,
जुड़ा न कोई नाता।
निश्चित युग पर्यन्त आपको,
देश रहेगा गाता।।

● हरदोई (उ.प्र.)

वश में होता

– डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मधुबनी

बादल में नभ को है घेरा,
चारों ओर है हुआ अंधेरा।
सूरज की रोशनी ढक गयी,
मन को तब डर ने था घेरा।।
बूंदा-बूंदी शुरू हो गयी,
मेघ कर रहा गर्जन-तर्जन।
बच्चे भय से भीत हो गये,
बिजली चमक रही है क्षण-क्षण।।
काश मेघ लाने का खटका,
मेरा हाथों के बश रहता।
जब पानी की कमी देखता,
खेतों में पानी ला देता।।
बाढ़ कहाँ मैं आने देता,
चाहे भरती नदियाँ सारी।
सही समय पर बर्षा होती,
उपज खेत में होती भारी।।

● मधुबानी (बिहार)

धत् तेरे की

हास्य कहानी : डॉ. अमिताभ शंकरराय चौधरी

''धत् तेरी के!'' मशहूर लेखक हरिप्रिय बंदर जी बिल्कुल झुँझला उठे। सप्ताह भर पहले धूम धड़ाका पत्रिका के संपादक की चिट्ठी आई थी, ''हास्य विशेषांक'' के लिए जल्दी से एक कहानी भेजिए।'' सात दिन और सात रात बेचारे लेखक महोदय अपना सर खजुआते रहे, कलम चबाते रहे, मगर एक प्लॉट अभी तक दिमाग में नहीं आया...

इतने में...

''अजी जंपी के पिताजी! उनकी पत्नी ने नीचे से आवाज लगाई, ''जंपी के विद्यालय में आज शिक्षक–पालक बैठक में जाना है। तुरंत गोभी ला दीजिए।'' लो, हो गया कहानी का सत्यानाश!

झोला उठाया। साइकिल लेकर दौड़े बाजार। रास्ते में कहीं कोई घटना दिखे तो शायद दिमाग की बत्ती जल जाए। ट्रिंग...ट्रिंग... घंटी बजाते हुए चले जा रहे थे। सोचते जा रहे थे। तभी दिमाग नहीं, एकदम से सिर ठनक उठा, ''अरे बाप रे!'' एक ढेला आ गिरा सर पर ''कै हौ रे?''

पीछे मुड़ कर देखा, तो दो नन्हे भालू उस्ताद भागे जा रहे थे। इतने में भौं–भौं यह क्या? उन बदमाशों ने शहद खाने के लिए मधुमक्खी के इस छत्ते पर ढेला चलाया था। छत्ता टूट गया। मधुमक्खियों की पूरी फौज निकल पड़ी, किसकी इतनी हिम्मत? माँ का दूध पिया है तो सामने खड़ा रह।''

अपनी माँ का दूध तो हरिप्रिय जी ने भी छक कर पिया था। मगर मधुमक्खिओं का सामना? माँ कसम।

कभी नहीं।

सिर पर साइकिल रख कर भागे...

उधर खीर सागर तालाब में नहाकर, बदन पर ढेर सारा कीचड़ लगा कर नन्हा हाथी कंबु सूँड़ से कीचड़ का फव्वारा छोड़ते हुए सड़क पर आ गया।

''अरे–रे–रे, तू ने यह क्या किया? हरि जी बौखला उठे, ''मेरे कपड़ों का सत्यानाश हो गया।''

''बुरा न मानो, होली है, काका !'' कहते हुए कंबु भागा झाड़ी में...

एक बार मन में आया– ''धत् तेरी! इस पोशाक में बाजार कौन जाए? फिर ख्याल आया जम्पी की अम्मा कैसे अपनी वाणी से आरती उतारेगी। सोचने लगे– होली के हुड़दग पर कोई हँसी की कहानी हो सकती है?

पर बाजार पहुँच कर बेचारे पड़े बड़े मुसीबत में। लेना क्या है– यही भूल गये थे। क्या ग–ग–। आखिर गाजर लेकर वापस चले...।

''अरे मुंशी जी देखिए हमारे ऊपर कितना जुल्म हो रहा है। दौड़ते हुए शशकलाल खरगोश ने उनको रोका।

''क्या हुआ भाई?''

''जंबुचंद सियार हमारे बिल में घुस आया है। जबर्दस्ती कब्जा। जान लेने की धमकी दे रहा है। अब बताइए बीबी बच्चों को लेकर कहाँ जाए?''

कहानी वहीं रह गयी। कहानीकार थाने जा पहुँचे। इन्स्पेक्टर सोनहा कुत्ते को लेकर जम्बुचन्द को शशकलाल के बिल से मार भगाया, ''ज्यादा गुंडई? भाग!''

घर पहुँचे। झोला रख कर उन्होंने आवाज लगाई, ''अरे जम्पी की अम्मां, जरा एक कप चाय पिलाना।'' कुर्सी पर बैठ कर पूँछ से खुद को गुदगुदाने लगे...

कागज कलम उठा कर सोच रहे थे कहां से शुरु करें? मगर हँसी का 'ह' तक हाशिए पर नहीं आया।

'' हे भगवान! मेरे तो भाग ही फूट गए। अरे यह आप क्या ले आए हैं? कहा था गोभी लाने। अब गाजर से मैं भला क्या बनाऊँ? गाजर के हलुए से भात खाइयेगा? हाय! बाबू ने आखिर एक लेखक के हाथों मुझे क्यों सौंपा था?'' पत्नी के गले में बिजली की कड़क!

सारी दुनियादारी से तंग आकर हरिप्रिय जी ने सोचा– चलो उस ताड़ के पेड़ पर चढ जाए। वहाँ कोई तंग नहीं करेगा। वहीं शांति से बैठ कर हास्य कहानी लिख डालें...

चढ गये ताड़ के पेड़ पर। कागज कलम लेकर। कुछ सोच ही रहे थे कि अचानक –ठक्...

''अरे बाप रे!''

''काँव, काँव!'' एक कौए ने उनके सिर पर चोंच से ठोकर मारा, तू हमारा अंडा चुराने आया है'' फिर ठक्–

'' अरे नहीं। मैं तो कहानी लिखने – ''कहते कहते–धड़ाम...

ठीक न्यूटन के सेब की तरह बेचारे पेड़ से धरती पर आ गिरे।

लँगड़ाते हुए घर जाते जाते सोच रहे थे कामेडी के बदले इस ट्रेजेडी को सुनने वाला कोई है?

● वाराणसी (उ.प्र.)

सही उत्तर

संस्कृति प्रश्नमाला

(१) परशुराम (२) संजय (३) कौण्डिण्य (४) शिवाड़ (५) वैवस्वत
(६) सैल्यूकस (७) महर्षि कणाद (८) महारानी लक्ष्मीबाई (९) उदयसिंह (१०) पुरूषोत्तम नागेश ओक

छोटे से बड़ा || ६, ५, १०, १, २, ८, ९, ४, ७, ३

सुधर गया कुक्कू

लघु कहानी : शिवचरण चौहान

कूक्कू मुर्गा बड़ा घमंडी और गप्पी था, बात-बात पर लंबी चौड़ी गप्पे हांकना तो उसकी आदत ही बन चुकी थी।

गांव के किनारे बड़े पीपल के पेड़ के नीच उसका दड़बा था, जहाँ वह ढेर सारी मुर्गियां और चूजों के साथ रहता था, रोज दोपहर को कूक्कू उड़ कर पीपल की निचली डालों पर बैठ जाता था। उसका समय तक पीपल पर रहने वाले सारे पक्षी भी दाना-खाना खा पीकर अपने अपने घोसलों में आराम कर रहे होते। कुक्कू उनसे अपनी बहादुरी के बड़े-बड़े किस्से बखान करता।

एक दिन कूक्कू ने तमाम पक्षियों के मध्य घोषणा की कि आज से उसे पक्षीराज कहा जाये, क्योंकि सूरज उसके ही बांग देने पर निकलता है और सवेरा होता है। वह जब भी चाहें, बांग दे कर सूरज को बुला कर सवेरा कर सकता है।

कुक्कू मुर्गे की ये घमंडी भरी बातें पीपल के कोटर में रहने वाले घुग्घू उल्लू ने भी सुनीं। उसे बहुत बुरा लगा। वह अभी नया नया आकर पीपल की खोखली कोटर में रहने लगा था। वह बाहर निकल आया और बोला- ''कूक्कू भाई। हम तुम्हें पक्षीराज तब तक नहीं मानेंगे, जब तक तुम साबित नहीं कर दोगे कि सूरज तुम्हारे बांग देने से ही निकलता है और तुम जब चाहो सूरज को बुलाकर सवेरा करा सकते हो। अब तो लोग घड़ी, स्मार्ट फोन आदि साधनों से भी सुबह होने का पता कर सकते हैं।''

''हाँ ...हाँ... मैं जब चाहूं सूरज को बांग देकर बुला सकता हूँ और सवेरा कर सकता हूं। सूरज मेरे बुलाने पर ही निकलता है।'' कूक्कू मुर्गे ने सीना फुलाकर जोश में कहा।

''अच्छा तो आज शाम होने के कुछ देर बाद तुम बांग देकर सूरज को बुला लेना और सवेरा करा देना। हम तुम्हें पक्षीराज तो पक्षीराज, सुबह का देवता मान लेंगे।'' घुग्घू ने शर्त रखी।

कूक्कू मुर्गा गप्पों के जोश में था। उसने बिना आगे-पीछे सोचे यह शर्त स्वीकार कर ली। घुग्घू उल्लू ने सभी पक्षियों की गवाही के साथ शर्तनामा भी लिखवा लिया।

शाम हुई। चारों तरफ अंधेरा फैल गया। गांव के सभी लोग खा-पीकर सोने लगे। तभी कुक्कू अपने दड़बे से बाहर निकला और शर्त के अनुसार सवेरा करने के लिए जोर जोर से बांग (आवाज) देने लगा। पीपल पर घुग्घू उल्लू के साथ सभी पक्षी दम साधे यह दृश्य देख रहे थे।

बांग देते देते कुक्क को घंटों बीत गये, पर सूरज नहीं निकला। उल्टे गांव के सभी लोग जाग गये। कुक्कू को बेवक्त अपनी नींद में बाधा डालते देख, उन्हें उस पर बड़ा गुस्सा आया। बस, कई लोगों ने उसको पकड़ लिया और भला बुरा कहने लगे। कुक्कू की सारी हेकड़ी निकल गई। वह परेशान हो गया, तो उसे वहीं छोड़कर सभी लोग चले गए।

गप्पी कुक्कू मुर्गे को अपनी गप्पों का फल मिल गया। पीपल पर बैठे सभी पक्षी हँस रहे थे।

तभी घुग्घू ने कुक्कू से पूछा, ''कहिए पक्षीराज। क्या अभी भी सूरज नहीं निकला।

सुनकर कुक्कू का रहा सहा घमंड भी चूर-चूर हो गया। वह भाग कर अपने दड़बे में जा घुसा।

● कानपुर (उ.प्र.)

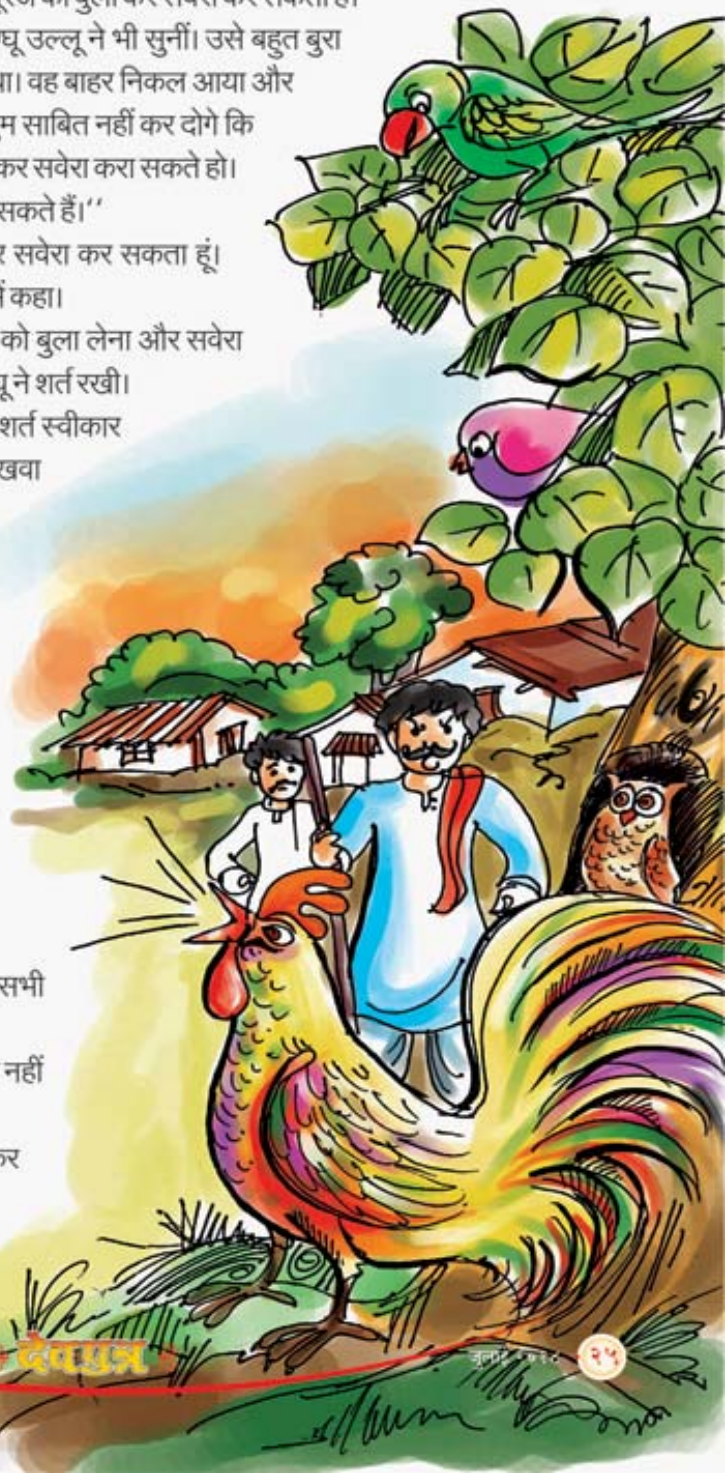

(गतांक के आगे)

कामरूप के संत साहित्यकार (१२)

कथासत्र–११

श्रीमंत शंकरदेव

(जन्म १४४९ महाप्रयाण १५६८)

संवाद : डॉ. देवेनचन्द्र दास 'सुदामा'

शंकर मनोरमा और माधव की परीक्षा चल रही थी इसलिए दो रविवार कहानी सुनना बंद रहा था। तीसरे रविवार शाम को पहले की तरह आम के वृक्ष के नीचे समय पर सब आ पहुँचे। दादाजी भी धीरे–धीरे आने लगे। दादाजी को देखकर तीनों खड़े हो गए और राम राम कहते हुए चरण स्पर्श किए।

सब बैठ गए। दादाजी एक बार ऊपर देखा। आम वृक्ष के ऊपर कोयल मधुर स्वर से संगीत सुना रही थी। विभिन्न प्रकार के पक्षी कलरव कर रहे थे। एक मधुर तथा मनमोहक परिवेश की सृष्टि हो रही थी। मनोरमा ने पूछा–दादाजी! दो रविवार हम कहानी नहीं सुन पाए। आज सुनने का मौका मिलेगा। आज मैं यहाँ बैठकर एक सुंदर परिवेश महसूस कर रही हूँ।

दादाजी – उसके बारे में थोड़ा बताओ तो।

मनोरमा – पेड़ के ऊपर कोयल का मधुर संगीत, चिड़ियों का चहचहाना, गर्मी भी नहीं है और ठंड भी। बहुत सुंदर वातावरण है न दादाजी?

दादाजी – हाँ, तुम बहुत अनुभवी हो। यह वसंत ऋतु के आगमन का संकेत है। पेड़–पौधों, पशु–पक्षियों, मनुष्यों का परममित्र है। इसके बारे में तुम लोगों ने विद्यालय में पढ़ा होगा।

माधव – जी हाँ नानाजी, हमारा परिवेश विज्ञान के पाठ्यक्रम में बहुत कुछ लिखा है। हमारे अध्यापक भी इस संदर्भ में हमको बताते हैं।

दादाजी – हाँ, इसलिए हमे प्राकृतिक वातावरण का संतुलन हमेशा बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। ठीक हैं अब हम कामरूप के बारे में चर्चा कर रहे थे ?

शंकर – जी हाँ दादाजी ! हमने कामरूप के संत साहित्यकार महापुरुष हरिदेव के बारे में सुना। आगे किसके बारे में सुनाएंगे?

दादाजी – आगे एक बहुत नटखट लड़के के बारे में

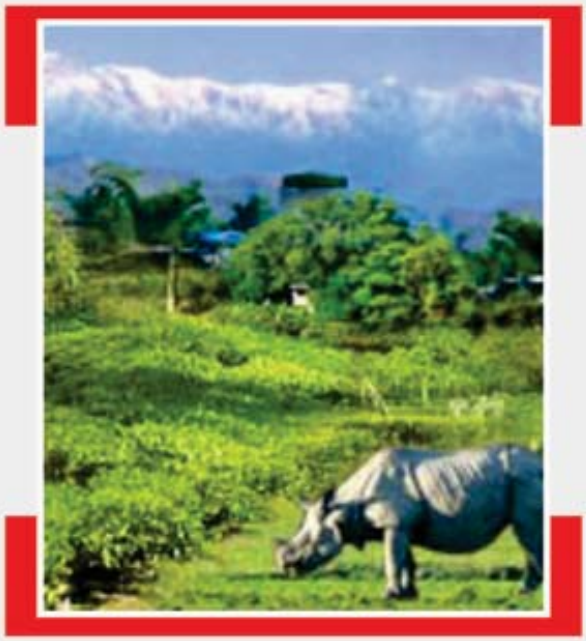

सुनाऊँगा, किन्तु उसके पहले प्राचीन कामरूप के प्राकृतिक वातावरण के बारे में दो–चार बातें सुनाऊंगा, कैसा लगेगा?

मनोरमा – सुनाइए दादाजी! बहुत मजा आएगा?

दादाजी – सुनो, पहले भी कहा था कि प्राचीन कामरूप मनोरम प्राकृतिक परिशोभा के लिए प्रख्यात था। नद, नदियाँ, गिरि–वन बहुत ही सुनहरे थे। अनेक प्रजातियों के पशु–पक्षियों का दृश्य सर्वत्र विद्यमान था। हाथी, भैंसा, वन्यगाय के अलावा एक सीगवाले गेंडे के लिए कामरूप प्रख्यात है।

शंकर– दादाजी! एक सिंगवाले गेंडा संसार के किस–किस देश में हैं बताइए तो।

दादाजी – तुमने बहुत सुंदर प्रश्न उठाया। सुनो और स्मरण रखो कि एक सींगवाला गेंडा सिर्फ कामरूप अर्थात् आज के असम में ही है। वैश्विक दृष्टि से यदि कहा जाए तो एक सींगवाला गेंडा केवल भारत में है।

मनोरमा – दादाजी ! इसके लिए भी भारत महत्वपूर्ण है।

दादाजी – हाँ जरूर। गेंडे का सींग बहुत कीमती है, जिसके कारण चोरी–छिपे शिकारी गेंडे को मारकर सींग काटकर ले जाते हैं। वर्तमान में गेंडे की हत्या बहुत बढ़ गई है। यह हमारे लिए दुर्भाग्य की बात है। जो भी हो कामरूप याने असम में वर्तमान में पहले जैसा प्राकृतिक वातावरण नहीं है। ठीक है अब मैं उस नटखट लड़के की बात सुनाता हूँ, जिसका नाम था शंकरबर।

मनोरमा – (हँसती हुई) दादाजी भैया का नाम भी तो

शंकर है और भगवान शिवजी का नाम भी शंकर है न?

दादाजी– हाँ, परन्तु उस लड़के का नाम शंकरबर था। सुनो अब उनकी जीवन कथा सुनाता हूँ। तेरहवीं सदी में भारतवर्ष के कुछ अंश मुसलमानों के अधीन हो जाने के बाद वे हिन्दुओं पर अत्याचार करने लगे। मुसलमान सेनाओं ने एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में कुरान लेकर हिन्दुओं को दोनों में से एक को स्वीकार करने का आदेश देने लगे। जो कुरान शरीफ को स्वीकार कर मुसलमान बने वे बच गए और अस्वीकार करने वालों को निर्दयता से हत्या करने लगे। अनेक हिन्दू इसके तहत या तो मुसलमान बन गए या मर गए। अनेक हिन्दू लोग अपना–अपना स्थान तथा धन सम्पति छोड़कर हिन्दू राजा के अधीनस्थ राज्य में जाने लगे।

उस समय कान्यकुब्ज देश के कुछ लोग अपने धर्म और प्राणों की रक्षा के लिए अपना स्थान छोड़कर गौड़ (बंगाल) राज्य में आए। उनमें लण्डादेव और चण्डीबर नामक दो कायस्थ भी थे। उस समय गौर राज्य का राजा था धर्मनारायण। दोनों उनके आश्रय में रहने लगे। गौर राज्य के पूर्वी तरफ कामरूप राज्य है। कामरूप का राजा दुर्लभनारायण के साथ गौर राजा की मित्रता थी। अपना राज्य सुचारू ढंग से शासन करने के लिए विद्वान लोगों की आवश्यकता हुई कामरूप के राजा को। इसके लिए उन्होंने गौर राज्य के राजा धर्मनारायण ने अपने राज्य के सात ब्राह्मण और सात कायस्थ कामरूप में भेज दिए। उनमें लण्डादेव और चण्डीवर कायस्थ भी थे। कामरूप के राजा दुर्लभनारायण ने सबको सम्मान सहित अपने राज्य में स्थापित किया ओर अपना सलाहकार बनाया।

उस लण्डादेव का पुत्र चण्डीबर था, उसको पुत्र राजधर के चार पुत्र थे सूर्यबर, जयंत, माधव और हलधर। सूर्यबर का पुत्र था कुसुम्बर और उनकी पत्नी थी सत्यसंधा। उस समय वे मध्य असम के ब्रह्मपुत्र महानद के दक्षिणी तरफ बरदोवा आलिपुखुरी नामक स्थान में रहने लगा था। कई वर्ष निःसंतान रहने के पश्चात कुसुंबर ने ब्रह्मपुत्र के उत्तरी तरफ स्थित शिंगरी के गोपेश्वर महादेव की पूजा की और उनके वर से एक पुत्र प्राप्त हुआ। भगवान शंकर के वर (आशीर्वाद) से प्राप्त होने के कारण पुत्र का नाम रखा शंकरवर। उसके पश्चात उनकी दूसरी पत्नी का भी एक पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम रखा बनगयाँगिरि।

तुम लोग अनेक महान पुरुषों की जीवनी पढ़ी होंगी न?

मनोरमा – जी हाँ दादाजी! अनेक तो नहीं, दो–चार की जरुर पढ़ी हैं।

दादाजी – अधिकाधिक महान व्यक्तियों का बाल्यकाल बहुत दुःखपूर्ण और कष्टकर होता है। शंकरबर का भी ऐसा ही हुआ। शंकरबर के जनम के तीन दिन बाद ही माता का निधन हो गया। उस समय उनकी दादी थी। दादी का नाम था खेरसूती। दादी ही बच्चे का पालन पोषण करने लगी। कुछ दिन पश्चात पिता कुसुम्बर का भी देहावसान हो गया। शंकरबर माता–पिता के प्यार–स्नेह से वंचित हो गया। दादी खेरसूती के अत्यंत आदर और लाड़ प्यार के कारण बच्चा नटखट बनने लगा। बाल्यावस्था में शंकरबर के जीवन में अनेक अलौकिक घटनाएँ भी घटी थी।

धीरे–धीरे लड़का बड़ा होने लगा। साथियों के साथ खेलने कूदने योग्य हो गया। साथियों में राम–राम गुरु, यज्ञेश्वर, नरोत्तम, मृत्युंजय आदि प्रमुख थे। शंकरबर देखने में अत्यंत सुन्दर और बलवान था। वह साथियों के साथ घूमने लगता था। कभी जंगल में जा कर जीव–जन्तुओं–पक्षियों को पकड़ कर खेलता और बाद में स्नेह के साथ छोड़ देता। बाल्यावस्था में वह अच्छा तैराक भी था। कामरूप का सबसे बड़ा नद है ब्रह्मपुत्र।

माधव– नानाजी! ब्रह्मपुत्र को नदी क्यों नहीं कहा जाता है। हमने पढा है कि नदियों का नाम हमेशा स्त्रीलिंग होता है, फिर ब्रह्मपुत्र पुल्लिंग कैसे हुआ।

दादाजी – ''ब्रह्म'' और ''पुत्र'' दोनों शब्द पुल्लिंग है या नहीं।

शंकर – है दादाजी।

दादाजी – इसलिए।

मनोरमा – भारत में ऐसी नदी हैं जिसका नाम पुल्लिंग है?

दादाजी – हाँ तो। जैसे– सिंधु, सोनभद्र। वर्षाकाल में ब्रह्मपुत्र समुद्र जैसा बन जाता है और उसका स्रोत भी तेज हो जाता था परन्तु शंकरबर उसकी परवाह न कर तैरकर ब्रह्मपुत्र पार कर जाता और वापस भी लौट आता। वह वन्य जानवर, साँप आदि से भी नहीं डरता था। उसका बल, साहस और बुद्धि असीम था। इस प्रकार उसकी आयु बारह वर्ष हुई।

आज समय हो गया। अगले रविवार को फिर सुनाऊँगा। आज के लिए राम...राम।

तीनों – राम... राम....

● ब्रह्मसत्र तैतलिया,
गुवाहटी (असम)

भिन्नता ढूंढो

• राजेश गुजर

बच्चों, नीचे दिए ७ भागो में फल व तरकारी बनी है, प्रत्येक भाग में कुछ भिन्नता है बताओ कौन से भाग में क्या भिन्न है?

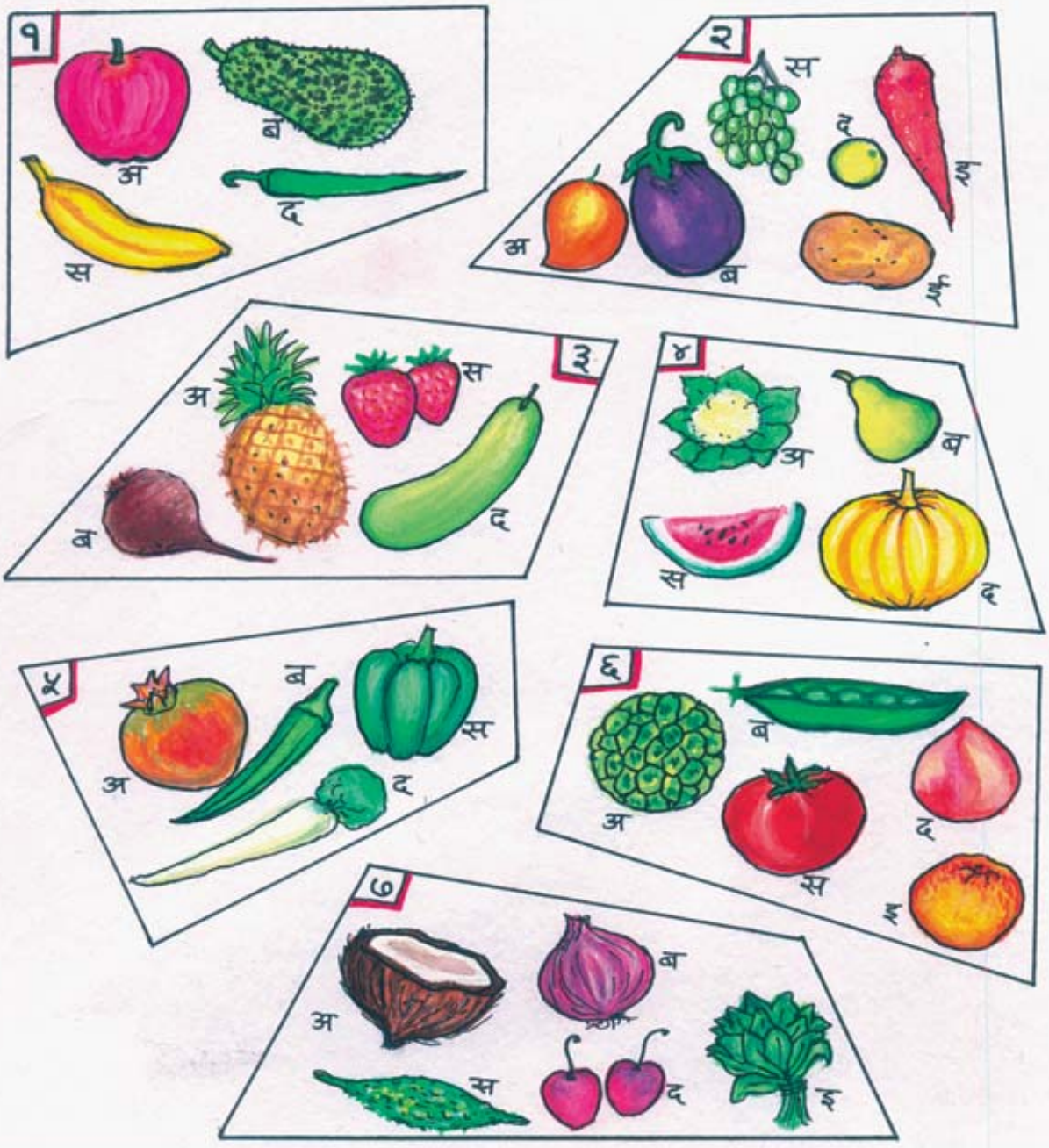

केले के छिलके

लघु कहानी : डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

अमित था तो उम्र में केवल सात वर्ष का ही, परन्तु था बहुत शरारती। सारे दिन छीनाझपटी, मारा–मारी उसकी आदत में शामिल थी। अमित का जिद्दी स्वभाव माँ को ही नहीं अपितु पिताजी व भाई विपुल को भी बेहद खलता था। बात–बात में अमित जिद कर उठता कि आज उसको अमुक चीज चाहिए तो कल अमुक चीज। वह कभी किसी बात का आगा–पीछा नहीं सोचता था। पड़ोसियों की नाक में दम कर रखा था नन्हे अमित ने।

उस दिन रविवार था अमित सुबह सोकर उठा तो उसे धुन लग गयी कि आज दोस्तों के साथ चिड़ियाघर घूमने जाना है। बस, फिर क्या था। उसने हाय–तौबा मचानी शुरू कर दी और धीरे से माँ को बोला– ''माँ, मेरी प्यारी माँ! आज मैं विकास, राजू, सीमा, पायल और रोशनी के साथ चिड़ियाघर की सैर करने जाऊंगा। और हाँ, जेबखर्च के लिए पिताजी से बीस रूपए भी दिलवा दो न!''

अन्त में अकित अपनी बात मनवाकर ही रहा और उसकी चिड़ियाघर की सैर पक्की हो गई। सभी बच्चे अपने अपने माता–पिता की आज्ञा लेकर चिड़ियाघर की ओर चल पड़े। खूब चाट पकौड़ियाँ खाई। उछलते कूदते चिड़ियाघर की जमकर सैर की। सचमुच बड़ा मजा आया अमित को सैर का। शाम चार बजे तक उन सबने चिड़ियाघर के जानवरों को देखा और फिर वापस चलने की तैयारी करने लगे।

पर अमित का मन अभी भरा नहीं था इस सैर से। इसलिए उसके आग्रह पर सभी बच्चों ने साढे चार बजे चिड़ियाघर को छोड़ा। बाहर निकलने पर सभी बच्चों को

भूख लगी हुई थी। सबके पास जेबों में दस-दस रूपये बचे थे। एक-एक दर्जन केले खरीद लिए सभी ने। खूब मजे से सभी बच्चे केलों का आनन्द ले रहे थे। किन्तु अमित तो था ही शरारती। अतः दोहरा आनन्द ले रहा था।

एक केले खाने का और दूसरा शरारत का। यानि केले के छिलके बीच सड़क पर डालते हुए वह बहुत प्रसन्नता का अनुभव कर रहा था। उसे क्या पता था कि केले के इन छिलकों से कोई अनहोनी भी घट सकती है। वह तो बस अपनी धुन में केले खाए जा रहा था और छिलकों को लापरवाही से सड़क के बीचों-बीच फेंक रहा था। उसके मित्रों ने मना भी किया पर अमित कहाँ मानने वाला था।

आधे घंटे बाद सब बच्चे अपने अपने घर आ पहुँचे। पर यह क्या। अमित घर में घुसते ही चौंक पड़ा। बड़ा भाई विपुल जोर जोर से रोए जा रहा था। माँ भी फोन से चिपकी हुई आंसू बहा रही थीं। आखिर जब अमित से न रह गया तो उसने माँ से पूछा-''माँ, माँ क्या बात है? तुम और विपुल भैया रो क्यों रहे हो?''

''कुछ नहीं बेटा, बस यूँ ही।'' माँ ने बात टालने के लहजे में सुमित से कहा।

''माँ! तुमको मेरी कसम, सच-सच बताओ कि आखिर हुआ क्या है?''

माँ ने अबकी बार साड़ी के पल्लू से आँसू पोछते हुए बताया- ''बेटा, तुम्हारे पिताजी के साथ दुर्घटना हो गई। अभी अभी। वह चिड़ियाघर की ओर से अपने स्कूटर पर आ रहे थे। बीच सड़क पर केले के कुछ छिलके पड़े हुए थे। छिलकों पर स्कूटर का पहिया फिसल गया और स्कूटर दूर जा गिरा। इस दुर्घटना में पिताजी का एक पैर टूट गया। और....।'' माँ आगे कुछ कहने ही वाली थीं कि अमित बीच में ही बोल पड़ा- ''माँ! इस दुर्घटना के लिए दोषी मैं ही हूं। मैंने ही वे छिलके सड़क पर डाले थे।'' कहते-कहते सुमित जोर-जोर से रोने लगा। वह बार-बार कह रहा था।

थोड़ी देर में अमित माँ के साथ अस्पताल में जा पहुँचा जहाँ उसके पिताजी बिस्तर पर लेटे हुए उन्हीं के आने की राह देख रहे थे। अमित पिताजी से लिपट गया और सड़क के बीचों बीच केले के छिलके फेंकने की सारी बात बताई।

अमित ने पिताजी के सामने अपने दोनों कान पड़के ओर बोला- ''मेरे प्यारे पिताजी। मैं आज के बाद कोई भी शरारत, जिद या ऐसा काम नहीं करूंगा जिससे आप सबको तकलीफ हो। मैं सच्च कहता हूं पिताजी! बस एक बार मुझे माफ कर दो।''

इतना सुनकर पिताजी की आँखें नम हो गई। उन्होंने बड़े प्यार से अपने सीने से लगा लिया और भविष्य में अच्छा बच्चा बनने की सलाह दी। सचमुच उस दिन के बाद से अमित ने सभी बुरी आदतें छोड़ दी थीं।

● **गुरुग्राम (हरियाणा)**

सही उत्तर

अंतर बताओ

(१) चित्र की कील गायब है (२) छोटी लड़की की नाक नहीं है (३) आदमी की मूँछ गायब है (४) महिला के कान की बाली गायब है (५) बच्चे की आँखें बंद हैं (६) रिमोट गायब है (७) फूलदान छोटा है (८) महिला के मुँह में अंतर है।

चित्र पहेलियां

★ चाँद मोहम्मद घोसी

ध्यान से देखो और बताओ यहां कौन कौनसे प्राणी चित्रित हैं ?

उत्तर :- 1- कछुवा, 2- गैंडा, 3- मुर्गी, 4- बत्तख, 5- कंगारू, 6- चमगादड़ और 7- खरगोश।

बाल प्रस्तुति

गुरुवर! तुम्हे प्रणाम

कविता : कृष्णा गेहलोद

अज्ञान दूर हटाकर जिसने,
ज्ञान की ज्योति जलाई।
जीवन में संस्कार दिए,
जीने की कला सिखाई।।

ज्ञान मिला नई दिशा मिली,
अब कर पाएं हम नेक काम।
हम ऋणी रहेंगे जीवन भर,
हे गुरुवर तुम्हें प्रणाम।।

● बेटीखेड़ी (म.प्र.)

(चन्द्रशेखर आजाद जयंती : २३ जुलाई)

आजाद ही रहेंगे

प्रसंग : रामकुमार गुप्त

भारत माता को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए सम्पूर्ण देश में अंग्रेजी शासन के खिलाफ विद्रोह भड़क चुका था। जगह–जगह सभाएं हो रही थीं। ''अंग्रेजो! भारत छोड़ो'' के नारों से आसमान गूँज रहा था। लोग सरकार से असहयोग कर रहे थे। विदेशी वस्तुओं व वस्त्रों की होली जलाई जा रही थी।

क्राँति की यह चिंगारी बनारस तक पहुँच चुकी थी। बड़ों के ही नहीं बच्चों के दिलों में भी भारत माँ की आजादी के लिए अदम्य साहस, जोश की उमंगें लहरा रही थीं।

सत्याग्रहियों का एक जुलूस। ''भारत माता की जय! ''इंकलाब जिन्दाबाद।'' ''अंग्रेजो! भारत छोड़ो'' का गगन भेदी घोष।

आन्दोलन को कुचलने के लिए गोरे क्रूरता की सीमाएँ पर कर रहे थे। एक अंग्रेज अधिकारी सत्याग्रही स्वयंसेवकों को पैर के बूटों से ठोकर मार रहा था।

यह अपमान जनक दृश्य देखकर एक बालक का खून खौल उठा। उससे न रह गया, उठाया एक पत्थर और उस पुलिस अधिकारी पर पूरी शक्ति से प्रहार किया। फिर उस फुर्तीले लड़के ने आव देखा न ताव, टेढ़ी–मेढ़ी गलियों में कन्नी काटते हुए नौ–दो–ग्यारह हो गया।

अधिकारी का माथा फट गया था और खून की धार बह चली थी। कई पुलिस वाले लगा दिए उसकी खोज करने की।

एक दिन वह दिखाई दे गया। पुलिस वालों की वर्दी और बन्दूकें देखकर वह अविचल खड़ा रहा। न डरा न भागा। सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया और वह अंग्रेज न्यायाधीश के सामने पेश किया गया। न्यायाधीश ने गरज कर पूछा– ''तुम्हारा नाम क्या है?''

''आजाद'' बालक ने निर्भीकता से उत्तर दिया।

''और तेरे पिता का नाम?''

बालक उच्च स्वर में बोला– ''स्वतंत्र''।

अबकी तिलमिलाते हुए न्यायाधीश ने पूछा– ''तेरा घर कहाँ है?''

बालक बड़े गर्व से बोला– ''जेल खाना।''

छोटे से बालक की ऐसी धृष्टता देखकर न्यायाधीश का गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया। उसने सजा सुना दी–

''इस दुस्साहसी अपराधी को १५ बेंत मारने की सख्त सजा दी जाए।''

सजा सुनकर तो वह मानो और जोश से भर उठा। अपनी पूरी शक्ति से भारत माता का जयघोष किया। उसके ऊपरी कपड़े उतरवा लिए गए। बेंतों की चोट से पहले, उसके हाथ–पैर बांधे जाने लगे।

''मुझे बांधते क्यों हो?'' कड़क कर बोला– ''बेंत लगाओ, मैं खड़ा हूँ।'' देखने सुनने वाले आश्चर्य चकित थे। जल्लाद ने बालक के सुकोमल शरीर पर बेंत बरसाने शुरु किये।

''सड़ाक'' एक। ''भारत माता की जय....।''

''सड़ाक'' दो। ''भारत माता की जय....।''

''सड़ाक'' तीन। ''भारत माता की जय....।''

पीठ की चमड़ी उधड़ गई थी। बेंत बरसते रहे किशोर के मुँह से भारत माता की जय.... महात्मा गांधी की जय-जयकार होती रही। गिनती बढ़ती रही, शरीर लहू लुहान होता रहा।

चार....छह....दस...। बदन से गर्म लहू रिसने लगा।

वीर-प्रसविनी भारत भूमि ने अपने लाड़ले की देह से टपकती रक्त की ताजी बूंदों को अपनी ममतामयी आँचल में भर लिया।

''वन्दे मातरम्'' ''भारत माता की जय!''

''इंकलाब...जिन्दाबाद''

बारह....पन्द्रह....बस।

जल्लाद के हाथ थक गए, किन्तु आजादी के दीवाने इस क्रांति वीर का चेहरा इस असह्य पीड़ा में भी शांत था।

''इंकलाब...जिन्दाबाद।'' ''अंग्रेजों! भारत छोड़ो'' के निर्भीक नारों के साथ बालक चल दिया। अपने घर की ओर।

बनारस के ज्ञानवापी मुहल्ले में रहकर संस्कृत और धर्मशास्त्रों का अध्ययन करने वाला यह बालक कौन था?

वहीं जिसने बचपन में अपने दुस्साहस और हैरतअंगेज कारनामों से लोगों को चौंका दिया था। माचिस की सारी तीलियां एक साथ अपने हाथ में जला दी थीं। खिलौनें वाली तोप में बारुद भरकर दागना, उसका प्रिय खेल था। तीर और बन्दूक चलाने में उसे बड़ा आनन्द आता। घूमना, निर्भीकता, स्वाभिमान, आजादी, वीरता जैसे गुण उसके नक्षत्र में थें।

तभी तो इस घटना ने उसे ''आजाद'' के रूप में सर्वत्र सुविख्यात कर दिया।

सम्पूर्णानन्द जी ने ''मर्यादा'' के लेख में ''वीर बालक-आजाद'' शीर्षक से प्रशंसा में लेख प्रकाशित किया।

वहीं ''आजाद'' जिसे हम सब महान क्रांतिकारी के रूप में जानते हैं। अपनी रोबीली मूंछों पर ताव देते, अपने बलिष्ठ शरीर पर केवल लुंगी, जिसमें ''माउजर'' पिस्तौल लगी रहती। देखा है, ऐसा चित्र? भारत के अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद का? जिसने अपनी इस कविता को साकार कर दिया था।

''दुश्मन की गोलियों का, हम सामना करेंगे।
आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे।

● गोला खीरी (उ.प्र.)

शावक और जलधारा

कविता : शिवमोहन यादव

छोटा सा शावक था आगे,
नदिया की जलधारा।
नन्हें उसके कदम, किन्तु वह,
शावक न था हारा।
लिए हौसला शावक ने फिर,
सोई शक्ति जगाई।
पीछे हटकर, तेज वेग से,
उसने दौड़ लगाई।
आज दिखाई पड़ी,
जोश की शक्ति अपरम्पार।
ऐसी भरी छलांग, हो गया,
पल में दरिया पार।

● गोला (उ.प्र.)

।हमारे राज्य वृक्ष।

उत्तरांचल का राष्ट्रीय वृक्ष :

बुरान्श

डॉ. परशुराम शुक्ल

हिम पर्वत का वृक्ष अनोखा,
भारत में मिल जाता।
लंका बर्मा चीन आदि से,
इसका गहरा नाता।
चीड़ बांज के साथ कभी तो,
रहता कभी अकेला।
बारहमासी पत्तों वाला,
वृक्ष बड़ा अलबेला।
इसे चाहिये सर्दी छाया,
पूरा पूरा पानी।
जंगल में सब कुछ पाकर यह,
देता गन्ध सुहानी।
लाल रंग के फूलों से यह,
मौसम में भर जाता।
और फूल सब झर जाते पर,
यह इन पर इतराता।
इसकी छाल, पत्तियाँ लकड़ी,
काम बहुत से आती।
औषधि सहित बहुत सी चीजें,
सारे वर्ष बनाती।

● भोपाल (म.प्र.)

तुम भी पीना

प्रसंग : रावेन्द्र कुमार 'रवि'

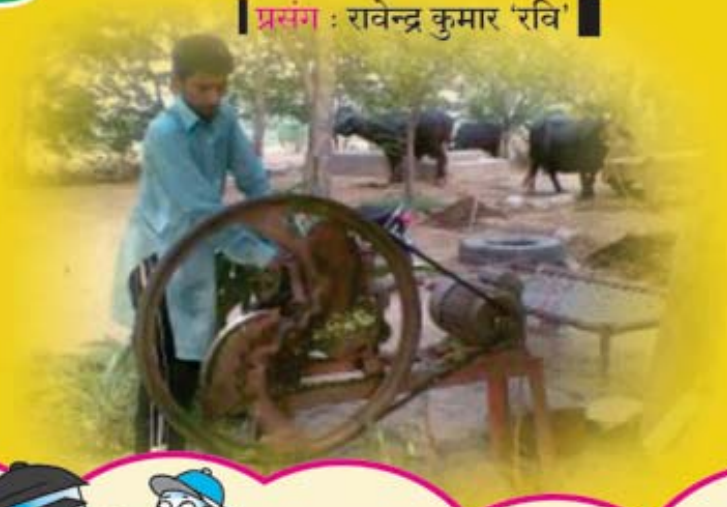

घुमा-घुमाकर चक्के को मैं
काट रही थी चारा।
पीछे से आवाज लगाकर
उसने मुझे पुकारा...
बहुत जोर से भूख लगी है
जल्दी कर दो सानी!
एक बाल्टी रखो साथ में
भरकर मीठा पानी!
पानी पीकर, सानी खाकर
दूध बनेगा बढ़िया!
तुम भी पीना और पिएगी
मेरी प्यारी गुड़िया!

• खटीमा (उत्तराखण्ड)

आपकी पाती

• मनीषा बनर्जी, नागपुर (महा.) –

देवपुत्र का मार्च विशेषांक जो कि स्वामी विवेकानंद की आयरिश अनुयायी भगिनी निवेदिता को समर्पित था, अत्यंत रोचक व अनूठा था।

सिस्टर निवेदिता के जीवन के अनछुए पहलुओं को प्रांजल व बाल सुलभ शैली में प्रस्तुत करने के कारण सभी रचनाएँ बेहद मर्मस्पर्शी और प्रभावशाली बन गईं। साथ ही माँ सारदा देवी के साथ बैठी हुई भगिनी निवेदिता की बेहद दुर्लभ तस्वीर प्रकाशित करने के लिए धन्यवाद।

रचनाओं को यथार्थपरक बनाने में जो योगदान आपकी टीम के दिया है उसके लिए उन्हें मेरे पूरे परिवार की ओर से साधुवाद।

****

• कुँवर प्रेमिल, जबलपुर (म.प्र.) – देवपुत्र आपने भेजी...पाकर लगा जैसे पीछे बहुत पीछे संस्कारों की दुनियां में पहुँच गया हूँ। आजकल ऐसी पत्रिकाएँ छपती कहाँ हैं। पत्रिकाएँ कहती हैं रचना में कोई शिक्षा (सीख) नहीं चाहिए। मन में विचार उठता है – फिर छाप ही क्यों रहे हैं? पत्रिका ने स्वामी जी (विवेकानंद) और भगिनी निवेदिता कि कहानी और हिन्दुस्थान में उनके रहने की शैली को भली भांति उकेरा है।

स्वामी के मूल मंत्र को (लव इंडिया सेव इंडिया) कितने आजमा रहे हैं। सर्व विदित है। अपने देश और देशवासियों की सेवा करना ही सबसे बड़ा मूल मंत्र है, यह प्रेरक है।

****

• श्रीमती जयाश्री श्रीवास्तव, गाजियाबाद (उ.प्र.) – देवपुत्र बाल पत्रिका के मार्च अंक को पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। आज केवल सस्ते मनोरंजन के नाम पर बच्चों को कहानियां दी जाती है। ऐसे में सिस्टर निवेदिता अंक का ज्ञान का एक सुखद झोंका लेकर आया है। इतने सरल, सुस्पष्ट, ज्ञानवर्धक, स्तरीय ज्ञान देने के लिए आपको साधुवाद है। बच्चे उनके नाम से भी अंनजान थे। आपने बहुत सुन्दर ढंग से छोटे-छोटे खण्डों में उनके जीवन परिचय को गागर में सागर की तरह भर दिया है।

इस तरह के प्रशंसनीय कार्य के लिए बधाई! मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि भविष्य में देवपुत्र पत्रिका अपने ज्ञानवर्धक, मनोरंजक विचारों से हमारी आने वाली पीढ़ी को राह दिखाए। दिनों दिन उन्नति के सोपान चढ़ कर सबकी प्रिय बन जाए।

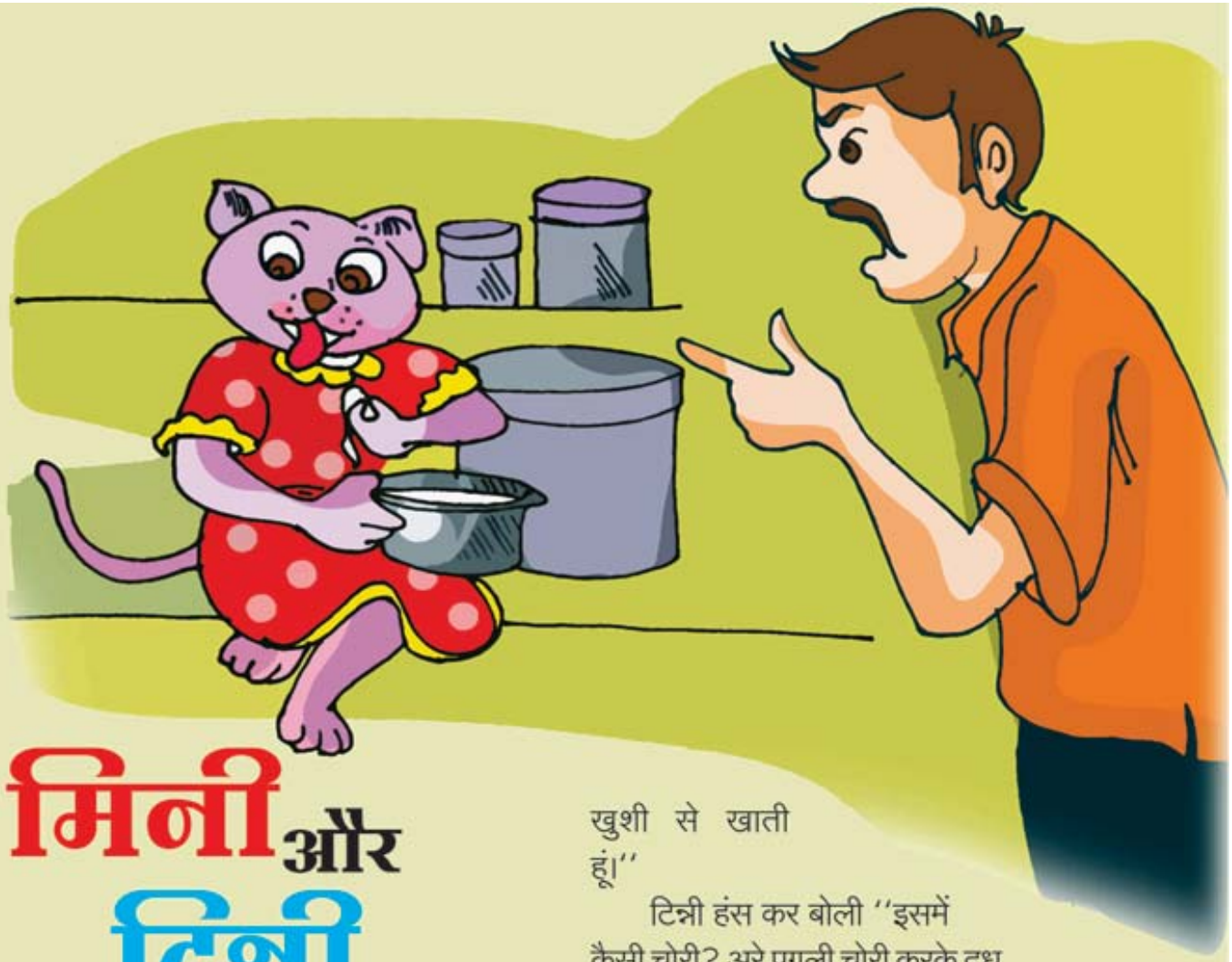

मिनी और टिन्नी

कहानी : डॉ. अनिता राठौर 'मंजरी'

मिनी और टिन्नी आपस में पक्की सहेलियाँ थीं। मिनी स्वभाव से सीधी और सरल थी जबकि टिन्नी बहुत चालाक थी।

उन दोनों के मालिकों का घर पास–पास था।

एक दिन टिन्नी मिनी से मिलने गई। उस समय मिनी सुखी रोटी खा रही थी जब कि रसोई में मलाईदार दूध रखा था। यह देख कर टिन्नी उससे बोली– ''मिनी, रसोई में मलाईदार दूध रखा है और तू सूखी रोटी खा रही है?''

मिनी बोली ''मैं चोरी करके नहीं खाती मेरे मालिक मुझे जो कुछ भी देते हैं मैं उसे बहुत प्यार और खुशी से खाती हूं।''

टिन्नी हंस कर बोली ''इसमें कैसी चोरी? अरे पगली चोरी करके दूध मलाई खाना तो हम बिल्ली जाति का अधिकार है।''

''लेकिन मैं चोरी से दूध मलाई खा कर अपने मालिक के साथ धोखा नहीं कर सकती मेरे मालिक मुझे खुद ही कभी–कभी दूध मलाई दे देते हैं।''

''अरे पगली! कभी कभार दूध मलाई खा लेने से क्या होता है? तू रोज रोज सूखी रोटी खाकर कैसी दुबली हो गई है? अरे! मुझे देख, मैं दूध मलाई खा कर कैसी मोटी हो गई हूँ।''

''लेकिन टिन्नी, अगर कभी तेरे मालिक ने तुझे चोरी से खाते देख लिया तो तेरी खैर नहीं, इसलिए यह आदत छोड़ दे तू'' मिन्नी ने उसे समझाते हुए कहा।

''मिनी ऐसी नौबत कभी आएगी ही नहीं जब मेरे मालिक गहरी नींद में सो जाते हैं तब मैं चुपके से दूध

मलाई साफ कर देती हूँ।''

''टिन्नी यह आदत बुरी है जल्दी से छोड़ दे और सुधर जा।''

''अपने भाषण अपने पास ही रख मैं तो चली दूध मलाई खाने।'' कहकर हंसते हुए टिन्नी चली गई।

एक दिन टिन्नी के मालिक ने उसे चोरी से दूध मलाई खाते हुए देख लिया उसकी खूब पिटाई लगाते हुए घर से बाहर निकाल दिया।

अब टिन्नी सड़क पर आ गई। इधर उधर भटकने लगी। अब उसे रूखी–सूखी भी नसीब नहीं होती थी और कुत्तों के डर से आजाद होकर घूम भी नहीं सकती थी।

ऐसे बुरे समय में उसे मिनी की याद आई उसने रोते हुए पूरी बात मिनी को बता दी यह सुनकर मिनी बोली– ''मैंने तुम पहले ही कहा था कि चोरी नहीं करनी चाहिए इसका अंजाम तो तूने अब देख ही लिया।''

टिन्नी सुबकते हु बोली– ''मिनी! मुझे माफ कर दो अब मैं कभी चोरी नहीं करूंगी। लेकिन अब तुम कुछ करो नहीं तो मैं भूखी रह कर मर जाऊंगी या फिर कुत्ते मुझे मार देंगे।''

मिनी ने उसे चुप कराते हुए जल्दी ही उसका इंतजार करने के लिए कह दिया।

एक दिन मालिक के मामा का लड़का आया मिनी को देखकर बोला ''भैया! इसे मुझे दे दीजिए इसे मैं बहुत प्यार से रखूंगा।''

लेकिन मालिक ने उसे देने से इंकार कर दिया।

रात को मिनी ने अपने मालिक को टिन्नी के बारे में बताया और कहा वह टिन्नी को अपने मामा के लड़के को दे दे।

मिनी की यह बात मालिक को पसंद आ गई उन्होंने अपने मामा के लड़के को टिन्नी के बारे में बताया तो वह उसे अपने साथ ले जाने के लिए तैयार हो गया।

मिनी की यह बात मालिक को पसंद आ गई उन्होंने अपने मामा के लड़के को टिन्नी के बारे में बताया तो वह उसे अपने साथ ले जाने के लिए तैयार हो गया।

मिनी ने जब यह बात टिन्नी को बताई तो वह खुशी से उछल पड़ी उसे गले से लगाकर बोली'' मिनी! तेरा यह उपकार मैं जीवन भर नहीं भूलूंगी।''

मिनी उसे प्यार से समझाते हुए बोली ''टिन्नी! जीवन में कभी भी चोरी करके मत खाना, तुम्हारे मालिक जो भी रूखा सूखा खाने को दे, उसे प्यार और खुशी से खाना इस तरह से मन को संतोष मिलता है।''

''तेरी यह बात मैं हमेशा गांठ बांध का रखूंगी।''

दूसरे दिन टिन्नी अपने नए मालिक के साथ चली गई।

● आगरा (उ.प्र.)

सचित्र प्रस्तुति- **संकेत गोस्वामी**

लाल ग्रह
मंगल

अपनी लाल चमकदार आभा के कारण औरों से कुछ अलग हटके है लाल ग्रह, मंगल. मंगल पर दिन-रात की अवधि पृथ्वी के लगभग बराबर है. अपनी धुरी पर मंगल को एक चक्कर लगाने में 24 घंटे 37 मिनट लगते हैं लेकिन वहां वर्ष, पृथ्वी से लगभग दुगुना होता है क्योंकि मंगल को सूर्य की परिक्रमा पूरी करने में 687 दिन लगते हैं.

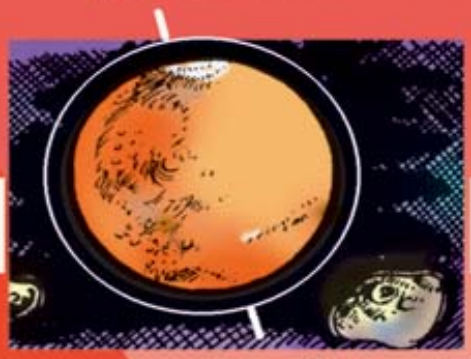

मंगल अपने अक्ष पर 24 डिग्री झुका हुआ है.

मंगल की गुरुत्वाकर्षण शक्ति पृथ्वी से एक-तिहाई है. और इसके दो उपग्रह है डेमोस और फोबोस. डेमोस छोटा है और इसकी खुद की गुरुत्वाकर्षण शक्ति तो इतनी कम है कि 36 कि.मी. प्रतिघंटा की रफ्तार पर दौड़कर ही वहां से अंतरिक्ष में स्थापित हुआ जा सकता है.

मंगल के वातावरण में कार्बन डाई-ऑक्साइड मौजूद है लेकिन कम तापमान के कारण ठोस है. इसका व्यास 6755.2 कि.मी. है और सूर्य से इसकी दूरी 22 करोड़ 80 लाख कि.मी. है.

दिन में मंगल ग्रह का औसत तापमान 23 डिग्री सेंटीग्रेड रहता है जो गरमी भरी रात होने पर भी 90 डिग्री सेल्सियस तक उतर आता है. मंगल की धरती पर लौह-आक्साइड मिली धूल की आंधियां छाई रहती हैं यही इसे गुलाबी और लाल आभा देती हैं.

मंगल पर हमारे सौर मंडल का सबसे वृहद कैनयन मौजूद है जिसे मरीनर वैली नाम दिया पृथ्वी के ग्रेंड कैनयन से ये 13 गुना अधिक बड़ी है.

मंगल ग्रह पर जीवन की कल्पना कठिन है. वहां सूर्य की पराबैंगनी किरणें आसानी से पहुंचती है, जो जीवित पदार्थ को समाप्त करने के लिए पर्याप्त हैं.

समाप्त

आत्म-विश्वास हो तो...

कहानी : रमाशंकर

दीपक नाम था उसका। वह अपने माता-पिता व छोटे भाई बहन अतुल व सुमन के साथ रहता था। वह पांचवी कक्षा में पढ़ता था। पढ़ाई में वह अपनी कक्षा में सबसे तेज छात्र था। वह हमेशा प्रथम श्रेणी में पास होता था। उसके माता-पिता को उससे बड़ी आशाएँ थीं।

वार्षिक परीक्षा निकट थी। दीपक कक्षा में अपना पहला स्थान बनाए रखने के लिए खूब मन लगाकर पढ़ रहा था। इसी बीच उसके पैरों को लकवा मार गया। उसके माता-पिता ने डॉक्टरों को बहुत दिखलाया पर वह ठीक न हो सका। उसका चलना-फिरना सब बंद हो गया।

उसके पिता एक निजी संस्था में छोटे पद पर नौकरी करते थे। उनका कार्यालय घर से थोड़ी दूरी पर था। दीपक की वार्षिक परीक्षा उन्होंने किसी तरह समय निकालकर दिलवाई।

इस बार परीक्षाफल घोषित होने पर दीपक का स्थान कक्षा में दूसरा था। परिणाम जानकर दीपक को बहुत दुःख तो हुआ, किन्तु उसने हिम्मत न हारी। विद्यालय की छुट्टियाँ उसने घर में बैठकर अगली कक्षा की किताबों को पढ़ने व अपने चित्रकारी के शौक को पूरा करने में बिता दी।

विद्यालय खुलने पर वह अपने पिता के साथ साइकिल पर बैठकर विद्यालय पढ़ने जाने लगा। लेकिन कुछ दिनों बाद उसके पिता का तबादला कंपनी की एक अन्य शाखा में, घर से ४० किलोमीटर दूर हो गया। उसे अब विद्यालय जाने व आने में असुविधा होने लगी। कुछ दिनों तक उसके एक-दो साथी उसे अपनी साइकिल पर बैठाकर विद्यालय ले जाते व लाते रहे। किन्तु धीरे-धीरे वो भी उसे विद्यालय ले जाने व लाने से कतराने लगे।

अतुल छोटा था। वह अपने भाई की अभी कोई मदद नहीं कर सकता था। अतः दीपक के सामने विद्यालय जाने व आने की समस्या देख मजबूरन उसके पिता को उसकी पढ़ाई बीच में ही रोकनी पड़ी।

दीपक की पढ़ाई रुक जाने पर बहुत दुःख हुआ। दिव्यांग हो जाने के कारण उसका खेलना-कूदना, पढ़ना लिखना सब बन्द

हो गया। वह अपना पूरा समय अब घर पर बैठकर रंग व ब्रश के सहारे काटने लगा। सुबह, दोपहर व शाम रंग और ब्रश लिए वह तरह–तरह के चित्र बनाता रहता। चित्रों में बनाने में उसे अक्सर रंग, ब्रश व कागज की जरूरत पड़ती रहती थी। कुछ दिनों तक उसके माता–पिता उसकी इस जरूरत को पूरा करते रहे, पर बाद में उन्होंने पैसों की तंगी के चलते उसकी जरूरतों को पूरा करना बंद कर दिया।

दीपक का चित्र बनाना, सामानों के आभाव के कारण लगभग रुक सा गया था। वह अपना शौक पूरा करने के लिए रास्ता खोजने लगा। एक तरकीब उसके दिमाग में आई। उसने एक छोटी सी पत्रिकाओं का पुस्तकालय खोलने की बात सोची।

उसने अपना विचार अपने माता–पिता को बताया। उसके माता–पिता को उसका विचार पसंद आया। उन्होंने सोचा चलो इसी बहाने दीपक का समय भी कट जाएगा और दो पैसे भी मिल जाया करेंगे।

दीपक के पिता ने कुछ पैसों की मदद से पुस्तकालय खोलने में उसकी सहायता की। दीपक का मकान मोहल्ले की मुख्य सड़क पर था। उसकी पिता ने सड़क के सामने वाले कमरे में उसको पुस्तकालय खोलने की अनुमति दे दी। कुछ समय बाद उसके पुस्तकालय के काफी लोग सदस्य बन गए। उसका पुस्तकालय अच्छा चलने लगा। पैसे भी नियमित आने लगे। वह उन पैसों को अपने माता–पिता को देने लगा। उसके माता–पिता उन पैसों में से अब कुछ पैसे उसे चित्रकारी का सामान भी खरीदने के लिए देने लगे।

दीपक अब पुस्तकालय में बैठा–बैठा पुस्तकालय चलाता या चित्रकारी करता रहता था। उसका समय अब बहुत अच्छी तरह से बीत जाता था।

शोभा नाम की एक अध्यापिका भी उसके पुस्तकालय की सदस्य थीं। एक

दिन के पत्रिका वापस करने पुस्तकालय में आईं। उन्होंने देखा, दीपक उगते हुए सूरज का एक बहुत ही सुन्दर चित्र बना रहा था। वो यह देखकर बहुत खुश हुईं। उन्होंने उसके चित्र की बड़ी प्रशंसा की। दीपक उनके प्रशंसा करने पर बहुत खुश हुआ।

शोभा जी अपने विद्यालय में कला अध्यापिका थीं। उन्हें चित्रकला की बहुत अच्छी जानकारी थी। उन्होंने दीपक का हौसला बढ़ाया। अच्छे चित्र बनाने के लिए उन्होंने दीपक को कुछ सुझाव व तरीके भी बताये। दीपक ने उनकी बातों को बड़े ध्यान से सुना और उनके सुझावों पर अमल करने का निश्चय किया।

कुछ दिनों बार शोभा अध्यापिका ने देखा कि दीपक के चित्रों में बहुत परिवर्तन आ गया था। वह पहले से बहुत अच्छे चित्र बनाने लगा था। दीपक की लगन व मेहनत देखकर वे बहुत खुश हुईं। दीपक के अन्दर छुपी प्रतिभा को उन्होंने बहुत जल्दी पहचान लिया। वह उसकी प्रतिभा को लोगों के सामने लाने में उसकी मदद करने लगीं।

एक दिन दीपक को उन्होंने जिले में होने वाली चित्रकला प्रतियोगिता की जानकारी दी और उसमें भाग लेने के लिए उसे प्रेरित किया।

दीपक ने शोभा टीचर की सहायता से प्रतियोगिता में भाग लिया। सौभाग्य से दीपक का स्थान प्रतियोगिता में पहला आया। उसे चित्रकला प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार दिया गया।

दीपक का हौसला पुरस्कार पाकर और अधिक बढ़ गया। वह शोभा अध्यापिका के माध्यम से अपनी चित्रकारी में और निखार लाने लगा।

दीपक के पिता नौकरी से अब सेवानिवृत्त हो चुके थे। वह उसके साथ बैठकर पुस्तकालय को अब और अच्छे ढंग से चलाने की बात सोच रहे थे। लेकिन उसी बीच उन्हें एक गंभीर बीमारी ने आ घेरा। उन्हें अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। उनकी दवा में काफी पैसा खर्च हो गया। उसकी माँ ने पैसे कम पड़ जाने पर एक साहूकार से कुछ रुपया उधार लेकर उनका किसी तरह इलाज कराया।

जब दीपक के पिता ठीक हो गये, तो साहूकार के आदमी उनके घर के चक्कर काटने लगे। यह देख दीपक के माता–पिता को बहुत चिंता हुई। पुस्तकालय से कुछ पैसे मिल जाते थे। किसी तरह घर का खर्च व अतुल और सुमन की पढ़ाई चलती थी। साहूकार का कर्ज उतारने के लिए उसके पिता रास्ता तलाशने लगे। काफी सोच–विचार करने के बाद भी उन्हें कोई उचित रास्ता न सूझा। वो बहुत चिंता में पड़ गए। इसी बीच राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर चित्रकला की प्रतियोगिताएँ हुईं। दीपक ने दोनों ही प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया। उसका भाग्य तेज था। उसे दोनों ही प्रतियोगिताओं में प्रथम पुरस्कार मिला।

उसने पुरस्कार की राशि के पैसे को अपने माता–पिता को साहूकार का कर्ज उतारने के लिए दे दिया। दीपक के माता–पिता के दीपक से सारी आशाएँ उसके दिव्यांग हो जाने के बाद से टूट चुकी थीं, लेकिन आज मुसीबत में उसीके अचानक काम आ जाने से उन्हें उस पर बड़ा गर्व हो रहा था। अपने इस छोटे दीपक की ज्योति से उनका परिवार दुखों के घेरे से बाहर निकलकर आज खुशी के बीच मुस्कुरा रहा था।

राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार मिल जाने के बाद दीपक के चित्रों की माँग बढ़ गई। देश के कोने–कोने से लोग उसके बनाए चित्रों को अच्छे पैसे देकर खरीदने लगे। पत्र–पत्रिकाओं से भी चित्र बनाने के खूब आदेश आने लगे। दीपक के घर की आर्थिक स्थिति अब काफी सुधर गई।

दीपक को सफलता की सीढ़ियों पर चढते देखकर उसके माता–पिता ने सोचा दीपक जैसे बच्चे यदि अपने आत्मविश्वास को न डिगाएँ तो उन्हें किसी के ऊपर बोझ बनकर जीना नहीं पड़ेगा। उन्हें बस जरूरत होगी अपने अंदर आत्मविश्वास को पैदा करने की लगन व मेहनत करने की और शोभा जैसी एक नेक अध्यापिका की।

● लखनऊ (उ.प्र.)

पुस्तक परिचय

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार जया मोहन की दो मोहक कृतियाँ

प्रकाशन – भारत प्रकाशन, ३० रामपार्क निकट थाना साहिबाबाद, गाजियाबाद (उ.प्र.) २०१००५

कलरव : ११ बाल कहानियों का रोचक एवं बोधक संग्रह।
मूल्य ८०/-

झुनझुना : २९ बाल कविताओं के विविध रूपों में अभिव्यक्त भावों की फुलवारी
मूल्य १००/-

विख्यात बाल साहित्य सर्जक, समीक्षक एवं प्रकाशक राजकुमार जैन 'राजन' की विभोर प्रकाशन २४२ सर्वधर्म कालोनी, सी-सेक्टर, कोलार रोड, भोपाल द्वारा प्रकाशित ३ बाल कृतियाँ

बस्ते का बोझ : २२ मनभावन बाल कविताओं का रसभरा संग्रह
मूल्य ४०/-

चिड़िया की सीख : मनोरंजक ढंग से ज्ञान एवं शिक्षा देती ७ बाल कथाएँ
मूल्य ४०/-

रोबोट एक दिला दो राम- २८ सुरुचिपूर्ण बाल कविताओं का महकता चहकता गुलदस्ता जिनमें हैं प्रकृति व पर्यावरण से जोड़ती संस्कार और परम्पराओं से सींचती कविताएं।
मूल्य -४०/-

बंदर की बारात : डॉ. जगदीश पंत 'कुमुद' की २८ बाल कविताओं का रुचिपूर्ण संग्रह
प्रकाशक– बाल साहित्य संस्थान
दरबारी नगर, पूर्वी पोखर खाली, अल्मोड़ (उत्तरांचल) मूल्य – ३०/-

चुनमुन चुनमुन : अब्दुल समद राही की रची १७ बाल कविताओं का संग्रह
प्रकाशक– चित्रा प्रकाशन, २४० सर्वधर्म कालोनी, सी–सेक्टर, कोलार रोड, भोपाल
मूल्य – ६०/-

बाल परिधि – ग्यारह वर्षीया नन्ही लेखिका कु. आद्या तोमर की ५१ बाल कविताओं का संकलन। नन्हीं लेखनी से बालमन के सुन्दर चित्र उकेरती कविताएँ।
सम्पर्क – कु. आद्या तोमर द्वारा / श्रुति तोमर, गौर निवास, हमलापुर, बैतुल (म.प्र.)

(चन्द्रदिवस २० जुलाई पर विशेष)

चंदा

• ओऽम्शरण आर्य 'चंचल'

चन्दा मामा! चमका करते!
चाँदी जैसे दमका करते।।
स्वच्छ गगन में जब आते हो।
अनगिन तारों को लाते हो।।
अन्धकार सब खो जाता है।
समय मनोहर हो जाता हैं।।
रुकते कभी न, चलते मामा।
अनुदिन रूप बदलते मामा।।
सरदी गर्मी वर्षा सहते।
कुछ भी नहीं किसी से कहते।।
सब में स्नेह जगाते मामा।
सब के मन में भाते मामा।।
जिस दिन पूरा रूप दिखाते।
बाल वृद्ध सब हँसते गाते।।
खबर हमेशा लेते रहना।
'चंचल' दर्शन देते रहना।।

• भौनखाल (उत्तरांचल)

बनें हम तुम्हारे जैसे

• मोहन गर्ग

चंदा मामा चंदा मामा,
रात को ही तुम आते क्यों?
आती जब किरणें सूरज की,
चले दूर तुम जाते क्यों?

छा जाता है अंधकार जब,
नजर तुरत तुम आते हो।
सुन्दर-शीतल किरणों से फिर,
चांदनी तुम बिखराते हो।।

हम भी बनें तुम्हारे जैसे,
अँधियारा पल में हर लें।
बनकर पथदर्शक राही के,
हर पथ अलोकित कर लें।।

• हापुड़ (उ.प्र.)

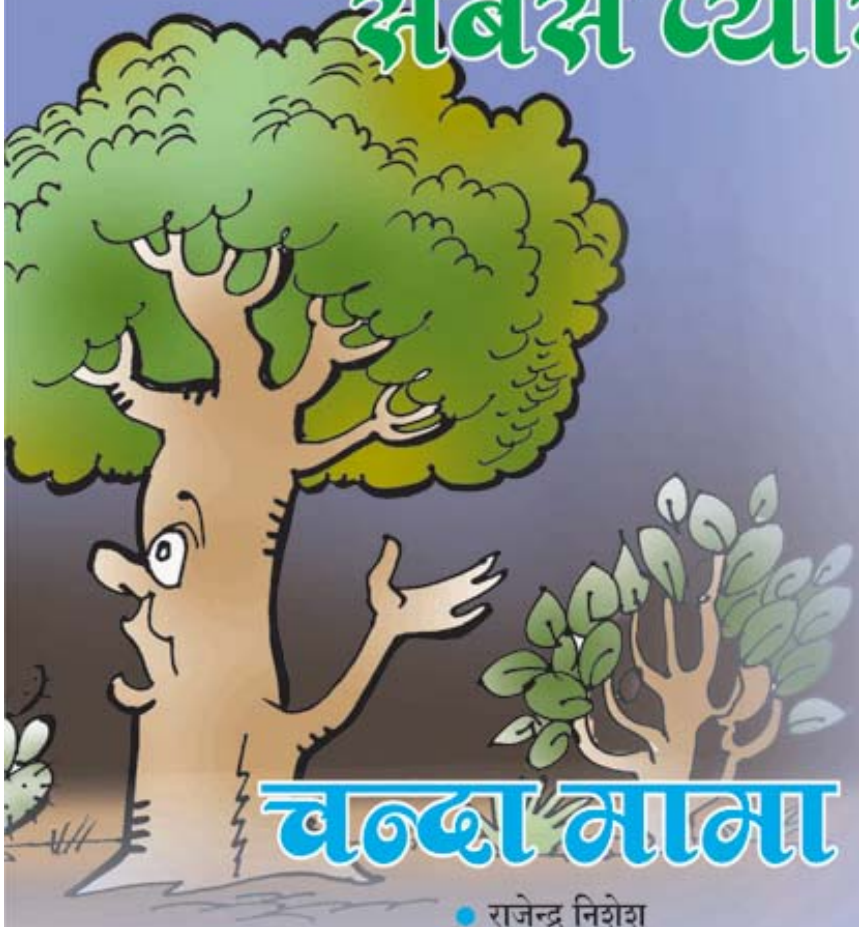

सबसे प्यार निभाता

● डॉ. शरद नारायण खरे

शीतलता के गीत सुनाता,
चंदा हरदम सबको भाता।
उजला–उजला, प्यारा–प्यारा,
सुंदरता लेकर मुस्काता।
घटना बढ़ना उसकी आदत,
पूरणमासी पर इठलाता।
दाग लगा उसके चेहरे पर,
अवगुण से बचना बतलाता।
क्रोध बुरा होता है प्रियवर,
धारण करना धैर्य सिखाता।
चांद की किरणों में अमृत है,
तन–मन दोनों स्वस्थ बनाता।
मामा कहलाता बच्चों का,
दुनिया को वह बहुत लुभाता।
गहन निशा में साथी है वह,
तारों का नायक कहलाता।
वह हितकर है, वह सुखकर है,
चंदा तो वरदान कहाता।
संझा होते ही आ जाता,
पौ फटते वापस घर जाता।
रूप–शील का भान कराता,
चंदा सबसे प्यार निभाता।

● मंडला (म.प्र.)

चन्दा मामा

● राजेन्द्र निशेश

चन्दा मामा खेल दिखाते,
रूप बदलकर आते जाते।
कभी गोल थाली से बनते
कभी रूप आधा दिखलाते।
रजनी के माथे बन बिन्दिया
किरणों की जाली बिखराते।
दादी माँ का चरखा ले संग
बड़ी शान से वह इठलाते।
चन्दा मामा बड़े अनूठे,
कमल फूल से खिलकर आते।
काले मेघों के आने पर
जाने क्यों ओट में जाते?

● चण्डीगढ़

हम पिछड़े क्यों?

चित्रकथा - देवांशु वत्स

|| बाल गीत ||

काहे माह जुलाई आता

कविता : पवन पहाड़िया

नानी का घर छोड़ गांव को
जाना बापिस नहीं सुहाता
हे भगवान! मजे सब छीने
काहे माह जुलाई आता
छुट्टी में जितनी की मस्ती
उस पर पाबंदी लगवा कर
बाबा लेने आने वाले
लगा सताने दिखला कर डर
विद्यालय खुलने वाला अब
कानों में आ गीत सुनाता
हे भगवान मजे...

अब सुनने को नहीं मिलेगी
नानी जी से रोज कहानी
दिलवाएंगे मामाजी अब
किसको रबड़ी, पुचका पानी
कौन कहेगा नानाजी को
घंटी सुनो दिलादो छाता
हे भगवान मजे...
घर जाते ही विद्यालय की
केवल चिंता लगने वाली
व्यस्त हमें कर देगा इतना
समय कहां तब होगा खाली
पीठ पेट की नानी मरती
भारी बस्ता हाय उठाता
हे भगवान मजे...

• डेह (राज.)

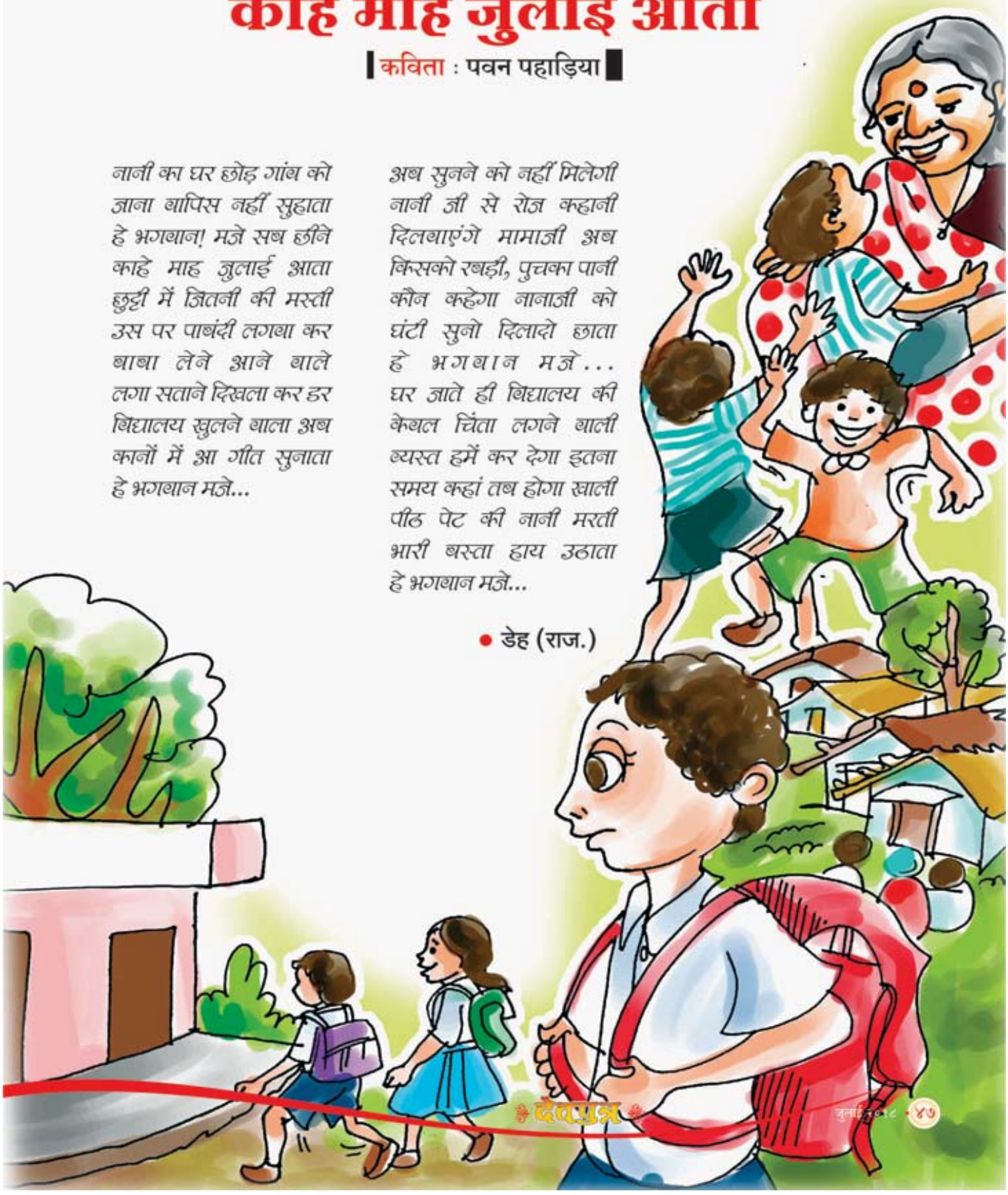

गुरुजी का प्रसाद

प्रसंग : डॉ. श्याम मनोहर व्यास

एक बार छत्रपति शिवाजी महाराज अपने गुरु समर्थ रामदास जी से मिलने उनके आश्रम में गए। समर्थ गुरू रामदास जी का आश्रम गोदावरी नदी के तट पर बना हुआ था। शिवाजी ने अपने गुरू को प्रणाम किया। गुरू रामदास जी ने शिवाजी को आशीर्वाद दिया। समर्थ गुरु रामदास जी व माताश्री जीजाबाई के मार्गदर्शन में ही शिवाजी ने स्वतंत्र महाराष्ट्र की स्थापना की और मुगलों से जीवन पर्यन्त संघर्ष किया।

गुरुजी से उन्होंने धर्मचर्चा और राजनीति पर बातचीत की। जब वे वापस अपनी राजधानी प्रतापगढ़ जाने लगे तो समर्थ गुरु रामदास जी ने उन्हें चार वस्तुएँ दी– श्रीफल, मिट्टी, कंकड़ और घोड़े की लीद।

शिवाजी ने इन्हें गुरु का प्रसाद मानकर अपने वस्त्र में बाँध लिया और इन्हें लेकर राजधानी लौट आए। पर उनकी समझ में यह बात नहीं आई कि इन चार वस्तुओं को देने के पीछे गुरुजी का क्या प्रयोजन है, अपनी इस शंका का निवारण करने के लिए वे अपनी माता जीजाबाई के पास गए। माता जीजाबाई को प्रणाम कर उन्होंने जीजाबाई से कहा– ''मातुश्री, समर्थ गुरु रामदास जी ने मुझे आते समय चार वस्तुएँ भेंट की थीं– श्रीफल, मिट्टी, कंकड़ और घोड़े की लीद। मेरी समझ में यह नही आ रहा कि इन वस्तुओं को देने के पीछे क्या प्रयोजन है। आप ही मेरी शंका का समाधान कर सकती हैं।''

जीजाबाई ने कुछ सोचकर उत्तर दिया– ''शिवा, श्रीफल देने का अर्थ है तुम्हारा कल्याण हो। तुम्हारी प्रजा का कुशल मंगल हो। मिट्टी देने का अभिप्राय है कि धरती पर तुम्हार आधिपत्य हो। राज्य में बढ़ोतरी हो। कंकड़ देने का अर्थ है तुम दुर्ग पर विजय प्राप्त करते रहो और घोड़े की लीद देने का प्रयोजन है तुम्हारा अस्तबल श्रेष्ठ घोड़ों से भरा हो।''

माता जीजाबाई ने इस प्रकार शंका का तर्क सम्मत समाधान कर दिया।

शिवाजी की माता जीजाबाई के उत्तर से संतुष्ट हो गए।

● उदयपुर (राज.)

पुरस्कार एवं सम्मान घोषित

देवपुत्र के माध्यम से वर्षभर में आयोजित
विभिन्न पुरस्कार एवं सम्मानों की घोषणाएँ इस प्रकार हैं।

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१७

देवपुत्र के व्यवस्थापक रहे स्व. श्री शांताराम जी भवालकर की पावन स्मृति में उनके परिवार द्वारा देवपुत्र के बाल पाठकों एवं लेखकों के लिए प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली इस प्रतियोगिता के विजेता हैं –

(१)	श्री योगेन्द्र साहू, नवागढ़ (छ.ग.)	प्रथम पुरस्कार	१५००/-
(२)	कु. वत्सला चौबे, भोपाल (म.प्र.)	द्वितीय पुरस्कार	११००/-
(३)	श्री अनमोल सोनी, बुढ़ार (म.प्र.)	तृतीय पुरस्कार	१०००/-
(४)	कु. पलक गुप्ता, खुजनेर (म.प्र.)	प्रोत्साहन पुरस्कार	५५०/-
(५)	श्री शशांक देवसिंह बघेल, उतैली (म.प्र.)	प्रोत्साहन पुरस्कार	५५०/-

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१७

प्रख्यात बाल साहित्यकार डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ द्वारा श्रेष्ठ बाल साहित्य सृजन को प्रोत्साहित करने हेतु प्रतिवर्ष आयोजित इस पुरस्कार में इस वर्ष बाल कहानी विधा पर कृतियाँ आमंत्रित की गईं थी। प्राप्त प्रविष्टियों में से विद्वान निर्णायकों द्वारा इस वर्ष के पुरस्कार हेतु चयनित कृति है–

सतरंगी कहानियाँ– कहानीकार : सौ. पद्मा चौगाँवकर, विदिशा पुरस्कार निधि ५०००/-

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०१७

सुविख्यात बाल साहित्य सर्जक एवं समीक्षक डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा गतवर्ष प्रवर्तित इस पुरस्कार हेतु इस वर्ष भारत माता के ग्राम्य गौरव पर विषय केन्द्रित बाल कहानियाँ आमंत्रित थी। पुरस्कार हेतु निम्न प्रविष्टियाँ चयन की गई है।

(१)	सपनो का गांव – गोविन्द भारद्वाज, अजमेर (राज.)	प्रथम	१५००/-
(२)	फिर जाऊँगा गाँव – डॉ. देशबन्धु शाहजहाँपुरी, शाहजहाँपुर (उ.प्र.)	द्वितीय	१२००/-
(३)	कबीट वाली नानी – डॉ. लता अग्रवाल, भोपाल (म.प्र.)	तृतीय	१०००/-
(४)	संकल्प – डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता', कटनी (म.प्र.)	प्रोत्साहन	५००/-
(५)	गाँव की पूजा – राजा चौरसिया, उमरिया (म.प्र.)	प्रोत्साहन	५००/-

प्रताप सम्मान २००७

सतना के ख्यात एवं क्रान्तिकारियों पर अनेक महाकाव्य लिखने वाले वरिष्ठ साहित्यकार श्री छोटेलाल जी पाण्डेय द्वारा इसी वर्ष क्रांतिकारियों पर लेखन हेतु प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने हेतु स्थापित इस सम्मान हेतु चयनित कृति है–

क्रान्तिकारी पर उनके अमर पत्र – श्री राजेन्द्र कोचला 'अम्बर', इन्दौर सम्मान निधि ५०००/-

30.09.2018 तक पाठकों के लिए विशेष कमीशन योजना

गांधी वध क्यों ?	**100.00**
गांधी वध और मैं	**200.00**
महात्मा गांधी भारत के लिए अभिशाप	**100.00**
ताजमहल 2200 वर्ष प्राचीन राजभवन	**100.00**
हिन्दू इतिहास / कुंज बिहारी जालान	**250.00**
My it Please your Honour	**100.00**
Why I Assassinated Mahatma Gandhi	**175.00**
Mahatma Gandhi A Curse for Bharat	**100.00**
Uttarakhand Cuisine	**95.00**

सुखवीर सिंह दलाल

आर्यवीरों के 101 प्रेरक प्रसंग	60.00
महापुरुषों के 101 प्रेरक प्रसंग	60.00
संतों के 101 प्रेरक प्रसंग	60.00
भारत के नारी रत्न	200.00
शोषितों के मसीहा दीनबन्धु छोटूराम	125.00
महापुरुषों की अमृतवाणी	250.00
दलित महान्	200.00
जाट जाति का प्लेटो महाराजा सूरजमल	125.00
संत वाणी	125.00
जाट विभूतियां	225.00
जाट वीरांगनाएं	60.00
वैश्य शिरोमणि	200.00
भूली बिसरी विभूतियां	200.00
आर्य समाज के रत्न	125.00
सिख वीरांगनाएं	60.00
भारत के प्राचीन संत	100.00
भारत के आधुनिक संत	125.00
राजनीतिज्ञों के प्रेरक प्रसंग	100.00
बुद्ध-गांधी और विवेकानंद के प्रेरक प्रसंग	60.00
सावरकर भगत सिंह आजाद प्रेरक प्रसंग	75.00
योद्धाओं के प्रेरक प्रसंग	100.00
पाश्चात्य विभूतियों के प्रेरक प्रसंग	125.00
तिलक सुभाष पटेल के प्रेरक प्रसंग	60.00
भूली बिसरी विभूतियों के प्रेरक प्रसंग	100.00
क्रांतिकारियों के 101 प्रेरक प्रसंग	60.00
विश्व के महान वैज्ञानिकों के प्रेरक प्रसंग	60.00
विश्व विख्यात महिलाओं के प्रेरक प्रसंग	60.00

निबंध/व्याकरण/शब्दकोश

निबंध सौरभ	350.00
निबन्ध कौशल	250.00
सरल हिन्दी व्याकरण	250.00
हिन्दी सही लिखिए	400.00
अंग्रेजी सही लिखिए	200.00
अंकुर सचित्र बाल शब्दकोश	250.00
युवराज श्रेष्ठ हिन्दी निबन्ध	150.00
बजरंग सचित्र ज्ञान विज्ञान कोश	125.00
सचित्र युवराज हिन्दी शब्दकोश	200.00

संपादित : घमंडीलाल अग्रवाल

सेवाभाव के एकांकी	125.00
न्याय अन्याय दर्शाते एकांकी	125.00
खेल संबंधी एकांकी	125.00
पर्यावरण चेतना के एकांकी	125.00
पर्व/त्योहारों के एकांकी	125.00
हास्य-व्यंग्य के एकांकी	125.00
शिक्षाप्रद एकांकी	125.00
देश प्रेम के एकांकी	125.00
सामाजिक कुरीतियों के एकांकी	125.00
विज्ञानपरक एकांकी	125.00
बाल समस्याओं की कविताएं	125.00
शिक्षाप्रद कविताएं	125.00
महापुरुषों क्रांतिकारियों की कविताएं	125.00
खेलों की कविताएं	125.00
भारतीय गौरव की कविताएं	125.00
पर्यावरण और विज्ञान की कविताएं	125.00
हास्य और व्यंग्य की कविताएं	125.00
उपयोगी वस्तुओं की कविताएं	125.00
देश प्रेम की कविताएं	125.00
जीव-जन्तुओं की कविताएं	125.00
देश प्रेम की 15 श्रेष्ठ कहानिया	150.00
शिक्षाप्रद 15 श्रेष्ठ कहानियाँ	150.00
कहावतों की 15 श्रेष्ठ कहानियाँ	150.00
पर्यावरण की 15 श्रेष्ठ कहानियाँ	150.00
अंधविश्वास की 15 श्रेष्ठ कहानियाँ	150.00
बाल समस्याओं की 15 श्रेष्ठ कहानियाँ	150.00
चरित्र-निर्माण की 15 श्रेष्ठ कहानियाँ	150.00
हास्य-विनोद की 15 श्रेष्ठ कहानियाँ	150.00
चुने हुए नुक्कड़ नाटक	250.00
चुनी हुई सरस्वती वंदनाएं	125.00
चुनी हुई हिन्दी गज़लें	125.00

नागेन्द्र सिन्हा

अगस्त क्रांति के शहीद	250.00
गदर पार्टी के शहीद	200.00
आजादी के दीवने	200.00
बलिदान भूमि भारत	200.00
देशभक्तों का बलिदान	200.00
देशभक्तों की शहदत	200.00
याद करेगा हिन्दुस्तान	200.00
हमारे वीर विप्लवी	200.00
शहीदे हिन्दुस्तान	200.00
शहीदों की स्मृति	200.00
हुतात्माओं की गाथा	200.00
शहीदी सफरनामा	200.00
26-11 के बलिदानी	125.00

जीवनी

क्रांतिकारी सरदार पटेल	60.00
जय श्रीराम	130.00
मूर्धन्य शिरोमणि महाकवि कालिदास	150.00
देशभक्त संन्यासी विवेकानंद	60.00
संत गुरू रविदास	60.00
महात्मा हंसराज	60.00
युग पुरुष वीर सावरकर	200.00
स्वामी श्रद्धानंद	60.00
नेता जी सुभाष चन्द्र बोस	60.00
अमर क्रान्तिकारी सुखदेव	60.00
महाराणा प्रताप	60.00
क्रान्तिकारी दयानन्द	60.00
भारत के महान् क्रांतिकारी	225.00
छत्रपति शिवाजी	60.00
वीरता में भारतीयता	60.00
क्रांतिकारी महिलाएं	75.00
क्रांतिकारी वासुदेव बलवन्त फड़के	75.00
भारतीय महापुरुष	75.00
ऐतिहासिक नारियां	60.00
पौराणिक नारियां	60.00
क्रांतिकारी भगत सिंह	60.00
यदि मन में है विश्वास तो हम होंगे कामयाब	150.00
झांसी की रानी	60.00
कबीर जीवन और दर्शन	100.00
अन्ना कितने अनाडी कितने खिलाड़ी	125.00
स्वामी दयानंद सरस्वती	60.00
चन्द्रशेखर आजाद	60.00
ऐसे बने थे डॉ. भीमराव अम्बेडकर	125.00
ऐसे बने थे सरदार पटेल	125.00
ऐसे बने थे एडोफ् हिटलर	150.00
ऐसे बने थे क्रांतिकारी चंद्र शेखर आजाद	125.00
ऐसे बने थे लाला लाजपत राय	125.00
ऐसे बने थे चार्ली चैप्लिन	200.00
ऐसे बने थे महात्मा गांधी	150.00
भारत के दुर्धर्ष क्रांतिकारी	125.00
गाथा काकोरी की	65.00
ऐसे बने थे शेरशाह सूरी	125.00
ऐसे बने थे नेपोलियन बोनापार्ट	125.00
पं. दीनदयाल उपध्याय महाप्रस्थान	60.00
ऐसे बने थे ए.पी.जे.अब्दुल कलाम	125.00
ऐसे बने थे दयानंद सरस्वती	125.00
सुभाषचन्द बोस सीमा के कितने पास	150.00

ऐतिहासिक पुस्तकें

भारत के एतिहासिक पर्यटक स्थल	75.00
सत्ता परिवर्तन	125.00
हिन्दू धर्म परिचय	150.00
द्वापर कालीन भारत	600.00
तुलसीऔर मानस	300.00
प्रसिद्ध ऐतिहासिक किले	75.00
व्यथित जम्मू कश्मीर	150.00
कलिकालीन भारत	300.00
बाल शोषण एक अभिशाप	100.00
महात्मा गांधी और उनके प्रेरक प्रसंग	200.00
दुखी भारतः लाला लाजपत राय	250.00

कहानी/उपन्यास

देशभक्ति की सच्ची कहानियां	60.00
श्रेष्ठ सांस्कृति कथाएं	60.00
श्रेष्ठ शिक्षाप्रद कथाएं	60.00
नारद की कथाएं	60.00
इन्द्र की कथाएं	60.00
हनुमान की कथाएं	60.00
प्रसाद की सम्पूर्ण कहानियां	400.00
बेगमों की ऐतिहासिक प्रेम कथाएं	100.00
भूली बिसरी ऐतिहासिक कहानियां	100.00
महाभारत की कहानियां खंड-1	150.00
महाभारत की कहानियां खंड-2	150.00
दायित्व	150.00
कथा कलश	175.00
विच्छू	175.00
लहू का रंग इक जैसा	200.00
जीवन की पगडंडियां	300.00
प्रतिबिम्ब	150.00
श्रीमद्भागवत पुराण की कथाएं	200.00
मंत्र तथा अन्य कहानियां	60.00
दो भाई तथा अन्य कहानियां	60.00
नमक का दरोगा तथा अन्य कहानियां	60.00
कफ़न तथा अन्य कहानियां	60.00
ईदगाह तथा अन्य कहानियां	60.00
शतरंज का खिलाड़ी तथा अन्य कहानियां	60.00
दो बैलों की कथा तथा अन्य कहानियां	60.00
पंच परमेश्वर तथा अन्य कहानियां	60.00
ज्ञानयोग	150.00
ज्ञानवर्धक कहानियां	65.00
एक और दशरथ	125.00
बेजान रिश्ते	125.00
सितारों से आगे	125.00
जैम्स बांड की श्रेष्ठ जासूसी कहानियां	150.00
सर्वश्रेष्ठ कहानियां	65.00
कहानियों का संसार	65.00
सचित्र साई बाबा के चमत्कार	60.00
फौजी की पत्नी	95.00
खुली आंखों के सपने	95.00
विवेकानंद की वाणी	75.00
सचित्र आओ सुने कहानियां	60.00
सचित्र पढ़े पढ़ायें ज्ञानवर्धक कहानियां	60.00
सचित्र पौराणिक कहानियां	60.00
शह और मात	150.00
खंडित लोकतंत्र	125.00
कहानी आज़ादी की	125.00
पानीपत के तीन युद्ध	125.00
स्वर्ग और नरक की अवधारनाएं	80.00
देना पावना	125.00
सती	95.00
पथ के दावेदार	125.00
प्रसाद के सम्पूर्ण काव्य	400.00
स्वरोदय	150.00
मेरी 51 कविताएं	60.00
बाल गीत	60.00
नवविधान	150.00
प्रदूषण कारण और निवारण	150.00
बेटी है ना	200.00
विश्व की प्रसिद्ध कहानियां	75.00

गृह-विज्ञान ,स्वास्थ्य ,पर्यावरण

सचित्र मनभावन व्यंजन कैसे बनाएं	195.00
सचित्र जायकेदार व्यंजन कैसे बनाएं	195.00
सचित्र भारतीय व्यंजन कैसे बनाएं	195.00
आचार मुरब्बे कन्फ्रेक्शनरी कैसे बनाएं	195.00
सचित्र फलों से स्वास्थ्य रक्षा	80.00
आओ देश को स्वच्छ बनायें	125.00
शिशु की स्वास्थ्य रक्षा कैसे करे	150.00
सचित्र पर्यावरण संचय कोश	150.00
भारत में पर्यटन विकास	150.00

अन्य पुस्तकें

विभिन्न कीड़े मकौड़े	75.00
सैक्स शिक्षा और समाज	125.00
भारत में यौन अपराध उनकी रोकथाम	150.00
भारत के प्रमुख तीर्थ स्थल	40.00
विद्यालय संगठन एवं प्रबन्धन	150.00
इंसान और जानवर	70.00
जीवन में आनंद कैसे आएं	150.00
दास्तान ए गढ़वाल	250.00
सत्ता संघर्ष इतिहास रचना लोकतंत्र	150.00
शैक्षिक अनुसंधान	150.00
बजरंग सचित्र सिलाई कढ़ाई कला	180.00
व्यवहारिक जनसंपर्क	150.00
अल्पविराम	100.00
परीक्षा की तैयारी कैसे करें	125.00
दिल्ली की अमानत	150.00
ज्ञानयन सूक्ति कोश	150.00
साइबर अपराध	150.00
अनौपचारिक शिक्षा	150.00
बजरंग सिलाई कढ़ाई कला	150.00
आधुनिक परमाणु और भौतिकी	150.00
महिलाओं के लिए शिक्षा	150.00
हम इस धरा के फूल बन जाएं	60.00
प्रसाद और उनकी सूक्तियां	95.00
संस्कारों का ध्रुवीकरण	125.00
महात्मा गांधी और उनकी महिला मित्र	250.00
नेताजी रहस्य गाथा	350.00
गांधी वेनकाव	150.00
नेहरु वेनाकाव	120.00
स्वदेशी चिकित्सा सार	150.00
भारतीय ज्योतिष	420.00
अग्नि की उड़ान	200.00
हिन्दू हिन्दुत्व और हिन्दुस्तान	80.00
भारत के अनमोल रत्न	150.00
संस्कृति के चार अध्याय	595.00
मेरा हिन्दुस्तान	295.00
इतिहास रहस्य	100.00
भारत का सम्पूर्ण इतिहास	150.00
सभी के लिए योग	300.00
खेलो के नियम	100.00
आधुनिक रसोई शिक्षा	150.00
वेजीटेरियन किचन किंग	250.00
घर का वैद्य	80.00
आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति	80.00
कश्मीरनामा इतिहास और समकाल	625.00
सोमनाथ	225.00
वैशाली की नगरवधू	295.00
सांस्कृतिक चेतना के स्वर	150.00
काव्यधेनु	100.00
क्या हिन्दुस्तान में हिन्दू होना गुनाह है	115.00
सरहद पार की कहानियां	175.00
भगतसिंह की जेल डायरी	300.00
भगवद्गीता	315.00
बच्चन मधुशाला	95.00
सूचना का अधिकार अधिनियम 2005	695.00
सवाल ही जवाब है	95.00
आपके अवचेतन मन की शक्ति	195.00
मेरी 51 कविताएं अटल विहारी वाजपयी	120.00

हमारी संस्था द्वारा निर्धारित मंगवाने के नियम व शर्तें

* पुस्तकें वी पी पी पैकेट से भेजेंगे। डाकिया आपको पुस्तकों का पैकेट देकर पेमेंट लेगा।
* पैकेट पर लिखे मूल्य के अलावा 5 प्रतिशत **M.O** चार्ज लगेगा जो आपको देना होगा।
* आदेश के साथ अपना पुरा पता पिनकोड नं0 के साथ अपना फ़ोन नं0 भी अवश्य लिखिए।
* 300.00 के कम के आदेश पर 40.00 डाक व्यय आपका होगा। 300.00 से अधिक पर डाक व्यय हमारा होगा।

Bank Details : Punjab National Bank
Branch Name : Vijay Nagar - Delhi
Account No. : 1524009300030890
IFSC Code No : PUNB0152400
MICR Code No : 110024037

विशेष कमीशन

500/-	10%+2.5%=12.50%
750/-	15% +5% = 20%
1200/-	20% +10% 30%
5000/-	20%+15%= 35%
15000/-	20%+ 20%= 40%

सूर्य भारती प्रकाशन
SURYA BHARTI PRAKASHAN
2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 दूरभाष : 011-23266412, 23285575 (मो.) 0-9891332357
email : suryabhartiprakashan@gmail.com

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१८-२०२०　　आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

केन्द्र सरकार के
चार साल - बेमिसाल

हिमाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री

श्री जयराम ठाकुर

के
दूरदर्शी कुशल नेतृत्व में

जन मंच कार्यक्रम
मुख्यमंत्री स्वावलम्बन योजना
हिमाचल गृहिणी सुविधा योजना
का हुआ शुभारम्भ।

जन मंच कार्यक्रम

- **जन मंच कार्यक्रम**, जनता की समस्याओं के समाधान में पारदर्शी एवं सार्थक कदम।
- सभी मन्त्री नियमित रूप से हर ज़िले के दूर-दराज क्षेत्रों में 'जन मंच' का आयोजन करेंगे, मौके पर लोगों की समस्याओं का समाधान होगा।
- सभी विभागों के अधिकारी भी उपस्थित रहकर निर्णय लेने तथा शिकायत निर्वारण में सहायक होंगे।
- लोगों को सरकारी कार्यालयों में आने की आवश्यकता नहीं रहेगी।
- जिला स्तर पर जन मंच का संचालन संबंधित उपायुक्त करेंगे।
- जन मंच का उद्देश्य वंचित लोगों की शिकायतों को पहचानना और उनका हल करना।
- सरकारी कार्यक्रम और योजनाएं ईमानदारी से लागू होंगी, लक्षित लाभार्थियों को मिलेंगे लाभ और सेवाएं।

मुख्यमंत्री स्वावलम्बन योजना

- औद्योगिक विकास के लिए अब तक की सबसे बड़ी योजना।
- युवाओं में उद्यमिता विकास व स्वरोज़गार सृजन की दिशा में एक क्रांतिकारी पहल।
- राज्य के आंतरिक एवं पिछड़े क्षेत्रों में औद्योगीकरण के लिए एक अहम प्रयास।
- राज्य में औद्योगिक इकाईयां स्थापित करने के लिए आर्थिक एवं भूमि संबंधित प्रोत्साहन।
- पूर्णतया राज्य सरकार द्वारा वित्त पोषित।
- वर्ष 2018-19 में 80 करोड़ रूपये का प्रावधान।
- 18-35 वर्ष आयु वर्ग के हिमाचली युवा होंगे लाभान्वित।

हिमाचल गृहिणी सुविधा योजना

- गृहिणी सशक्तिकरण और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अनुकरणीय पहल।
- योजना के पात्र ऐसे सभी हिमाचली परिवार होंगे, जिनके पास अपना या किसी भी सरकारी योजना के तहत घरेलू गैस कनैक्शन नहीं है।
- लाभार्थियों का चयन, ग्रामीण क्षेत्र में ग्राम पंचायत तथा शहरी क्षेत्र में शहरी स्थानीय निकाय करेंगे।
- ईंधन लकड़ी ढोने से छुटकारा, चूल्हे के धुएं से छुटकारा।
- वन कटान पर रोक, सभी परिवारों को गैस कनैक्शन।
- होगा पर्यावरण सरंक्षण, परिवार होंगे खुशहाल।

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश द्वारा जारी

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित　　प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अठाना